मुक्ति के संदेश

मुक्ति के संदेश

लेखक :

सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेश माला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स नं० 3815
नई दिल्ली-110049

भाग सात

प्रथम संस्करण, 1978

मुद्रक :
पाइनियर फाईन आर्ट प्रेस,
अजमेरी गेट, दिल्ली-6

परीचय

उद्धार पवित्र बाइबल का एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण विषय है। पाप वास्तव में एक बड़ी ही भयंकर तथा घृणाजनक वस्तु है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसके अनुग्रह से यीशु मसीह के द्वारा, उस की आज्ञाओं को मानकर, हम अपने पापों से छुटकारा वा क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। और यीशु मसीह के अनुयायीयों को लिखते समय प्रेरित यूहन्ना ने पवित्रात्मा से प्रेरणा पाकर यूं कहा, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।" (१ यूहन्ना १ : ७)।

प्रस्तुत पुस्तक में जिन प्रवचनों को आप पढ़ने जा रहे हैं इन का सम्बन्ध हमारे उद्धार से है। इन का उद्देश्य इस विषय पर हमारे ध्यानों को बाइबल की ओर आकृषित करने का है, और इसलिए, हमारा आप से अनुरोध है कि आप अपनी बाइबल के प्रकाश में इन पाठों का अध्ययन करें। और हमारी आशा है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो आप सच्चाई से परिचित होकर प्रभु की आज्ञा माननेवाले बन जाएंगे, और इस प्रकार अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके प्रभु के परिवार, अर्थात् उस की एकमात्र कलीसिया में शामिल हो जाएंगे।

इन प्रवचनों के वक्ता तथा लेखक आप के जाने-माने प्रचारक भाई सनी डेविड हैं। भाई सनी डेविड के साथ इन प्रवचनों की रिकार्डिंग का

कार्य समाप्त करने के बाद मुझे यह सौभाग्य भी प्राप्त हुआ कि मैं रेडियो श्री लंका से इन के नियमित प्रसारण का प्रबन्ध करूं, ताकि रेडियो के माध्यम से ये प्रवचन पूरे भारत तथा आस-पास के सभी देशों के लोगों तक पहुंच सकें। अब, अधिक और कुछ न कहकर मैं लेखक के इन पाठों को पढ़ने के लिए इस पूर्ण-विश्वास के साथ आप को आमन्त्रित करता हूं कि ये आप के जीवन में अत्यन्त ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली-११००४६

विषय सूची

		पृष्ठ
१. आप किस ओर हैं	...	६
२. यदि मैं यीशु का प्रचार करूं	...	१५
३. एक उदाहरण की प्रार्थना	...	२२
४. एकता की प्रार्थना	...	२८
५. प्रवेश कौन करेगा ?	...	३४
६. मूढ़ता की मृत्यु	...	३६
७. पाप और उस से छुटकारा	...	४५
८. उद्धार का अभिप्राय	...	५१
९. परमेश्वर का अद्भुत प्रेम	...	५७
१०. परमेश्वर की इच्छा से	...	६३
११. यीशु, एक महान् शिक्षक	...	७०
१२. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, एलिय्याह, या यिर्मयाह ?	...	७६
१३. मार्ग और सच्चाई और जीवन	...	८२
१४. परमेश्वर का प्रकाशन	...	८८
१५. मृत्यु तथा पुनारुत्थान	...	६५

१

आप किस ओर हैं ?

मित्रो :

मैं सचमुच में परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि उसने मुझे यह सुअवसर प्रदान किया है कि मैं नम्रता और पूरी खराई के साथ उसका वचन आप तक पहुंचाऊं। मेरी आशा है कि आप उन सब बातों पर बड़ी ही गम्भीरता से विचार करेंगे जिन्हें मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं।

सैकड़ों वर्ष पूर्व, इस्राएली लोग जब मूसा की अगुवाई में, परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा किए देश की ओर बढ़ रहे थे, तो मार्ग में परमेश्वर ने मूसा को एक जगह एकान्त मे बुलाकर, उसके द्वारा अपनी प्रजा को अपनी वाचा दी ताकि सारे इस्राएली लोग परमेश्वर की उस लिखी हुई वाचा के अनुसार चलें। उस वाचा के अनेकों नियमों व आज्ञाओं में यह आज्ञा भी सम्मिलित थी, कि परमेश्वर के लोग अपने लिये कोई मूर्त्ती खोदकर न बनाएं, न किसी वस्तु की प्रतिमा बनाएं, और सच्चे वा जीवते परमेश्वर को छोड़कर, न तो किसी मूर्त्ती इत्यादि के सामने झुकें न उनकी उपासना करें। (निर्गमन २० : ४, ५)। परन्तु हम पढ़ते हैं, कि जब मूसा परमेश्वर की आज्ञाओं की वाचा को लिये हुए उन लोगों के निकट पहुंचा, तो उसे यह देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कि उन लोगों ने खोदकर अपने लिये एक प्रतिमा बना ली थी और वे उस मूर्त्ती की पूजा कर रहे थे, उसे दन्डवत कर रहे थे, और उसकी उपा-

सना कर रहे थे। उन लोगों की ढिठाई के कारण मूसा ने उन्हें ललकार-कर कहा, कि तुम मे से जो कोई यहोवा परमेश्वर की ओर का हो वह मेरे पास आए। (निर्गमन ३२ : २६)।

सैकड़ों वर्ष पहिले, लोगों के सामने रखा गया यह प्रश्न आज भी लोगों के लिये एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आज बहुतेरे लोग परमेश्वर और शैतान दोनों की सेवा एक साथ मिलकर करना चाहते हैं। वे एक ओर तो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और दूसरी ओर शैतान को भी प्रसन्न करना चाहते हैं। एक ओर तो शायद वे अपना कुछ समय, या धन, या योग्यता परमेश्वर को दे रहे हों, परन्तु दूसरी ओर, वे अपना बाकी का समय, धन और योग्यता इत्यादि को शैतान को प्रसन्न करने में लगा रहे हैं। परन्तु यह असम्भव है, क्योंकि हम परमेश्वर और शैतान दोनों को एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते। प्रभु यीशु ने कहा, "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता......"तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते"।" (मत्ती ६ : २४)।

किन्तु, जिस प्रश्न पर हम विचार कर रहे हैं, उसके सदा ही दो पहलू रहे हैं। जैसे कि, उदाहरण के रूप से, भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के दिनों में, हम पढ़ते हैं, कि बहुतेरे लोग बाल नाम के एक देवता की उपासना करते थे। सो एलिय्याह ने उन लोगों के पास आकर कहा, कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे ? सो आओ आज परखकर देख लें, और यदि यहोवा परमेश्वर हो तो उसके पीछे हो लो और यदि बाल सच्चा परमेश्वर ठहरे तो उसके पीछे हो लो। (१ राजा १८ : २१)। ये लोग परमेश्वर की भी उपासना करना चाहते थे और बाल देवता की भी। परन्तु न तो परमेश्वर बाल था और न बाल परमेश्वर था, क्योंकि परमेश्वर सच्चा वा जीवता है, और बाल लोगों का केवल एक मनगढ़ंत देवता था। सो एलिय्याह ने उनसे कहा, कि तुम कब तक

दो विचारों में लटके रहोगे, या तो पूरी तरह से परमेश्वर की ओर हो लो या फिर बाल देवता की ओर। अकसर मेरे पास कुछ लोगों के पत्र आते हैं, वे कहते हैं कि हम इस भगवान को या उस भगवान को मानते हैं, और साथ ही हम प्रभु यीशु मसीह को भी मानते हैं। परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह बात बिल्कुल असम्भव है। आप एक ही समय में यीशु मसीह को और किसी और को अपना उद्धारकर्त्ता नहीं बना सकते। वास्तव में, यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। सो या तो हम पूरी तरह से प्रभु यीशु की ओर हैं या हम उसके विरोध में हैं। उस ने कहा, "जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है।" (मत्ती १२ : ३०)।

उसने यह भी कहा, कि वे लोग जो संसार के चौड़े व खुले मार्ग पर चल रहे हैं उनका अन्त अनन्त विनाश होगा, परन्तु वे जो परमेश्वर के सकरे वा कठिन मार्ग पर चल रहे हैं वे अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती ७ : १३, १४)। परन्तु, तौभी, आज बहुतेरे लोग अपनी मन-मानी से संसार के चौड़े मार्ग पर चलकर अनन्त जीवन में प्रवेश पाना चाहते हैं। किन्तु यह असम्भव है। क्योंकि प्रभु ने कहा, कि संसार का चौड़ा मार्ग अनन्त विनाश को पहुंचाता है, और परमेश्वर का सकरा मार्ग अनन्त जीवन को पहुंचाता है। इसलिये, चौड़े मार्ग पर चलकर यदि कोई सकरे मार्ग की मंजिल पर पहुंचने की इच्छा करता है, तो वह पूरब की ओर जाते हुए पश्चिम में पहुंचने का स्वपन देख रहा है। परन्तु आप जानते हैं कि यह बिल्कुल असम्भव है। और यह बात भी बिल्कुल असम्भव है, कि दोनों मार्गों पर एक—साथ चलकर मनुष्य अनन्त जीवन प्राप्त कर ले। क्योंकि ये दोनों मार्ग एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। इसलिये, या तो हम पूरी तरह से सकरे मार्ग पर

चल सकते हैं और या फिर चौड़े मार्ग पर।

ठीक यही सिद्धान्त परमेश्वर के प्रति हमारी भक्ति वा उपासना के बारें में भी काम में लाया जा सकता है। अर्थात्, या तो हमारी उपासना सच्ची है और या फिर वह व्यर्थ है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, कि अवश्य है कि परमेश्वर के लोग उसकी उपासना आत्मा और सच्चाई से करें। (यूहन्ना ४ : २४)। और आत्मा और सच्चाई से हम परमेश्वर की उपासना केवल तभी कर सकते हैं, जबकि हम उसकी उपासना केवल उसके वचन के अनुसार करें, क्योंकि उस का वचन ही सत्य है। (यूहन्ना १७ : १७)। बहुतेरे लोग परमेश्वर की उपासना तो करते हैं, परन्तु उनकी उपासना बिल्कुल व्यर्थ होती है, क्योंकि वह सच्चाई से, अर्थात् उसके वचन के अनुसार नहीं होती, परन्तु वह मनुष्यों की बनाई हुई विधियों, रीति वा रिवाज़ों के अनुसार होती है। इसीलिये, प्रभु ने कहा, "ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५ : ९)। आज अधिकांश लोग जो अपने आप को मसीही कहते हैं, उनकी उपासना वास्तव में व्यर्थ है, क्योंकि वे परमेश्वर की उपासना मनुष्यों की बनाई हुई विधियों के द्वारा कर रहे हैं। वे ऐसे-ऐसे दिनों वा त्योहारों को मानते हैं जिनका परमेश्वर के वचन में नाम तक भी नहीं मिलता, वे उसकी उपासना ऐसी-ऐसी विधियों के द्वारा करते हैं जिनकी शिक्षा परमेश्वर का वचन बिल्कुल नहीं देता, परन्तु वे मनुष्यों के बनाए हुए धर्मोपदेश हैं। परन्तु यदि हम परमेश्वर की ओर हैं तो हम उसकी उपासना केवल उसके वचन में दिये हुए नियमों के अनुसार ही करेंगे। किन्तु, हम परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई से नहीं कर सकते यदि हम मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते और सिखाते हैं।

सो आप किस की ओर हैं ? यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप अवश्य ही इस बात को स्वीकार करेंगे कि केवल परमेश्वर का

मार्ग ही सच्चा है। (यशायाह ५५ : ७-९)। यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप अपने मन में इस बात का अनुभव करेंगे कि प्रत्येक मनुष्य अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से अलग और दूर है। (यशायाह ५९ : १, २)। यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप मानेंगे, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य—कर्म है। (प्रेरितों ५ : २९; १ यूहन्ना २ : ३, ४)। और, यदि आप परमेश्वर की ओर हैं, तो आप इस बात का निश्चय करेंगे, कि आप सदा परमेश्वर के प्रति विश्वासी और वफ़ादार बने रहेंगे। (प्रकाशित० २ : १०; लूका ९ : ६२)।

परन्तु, वे जो परमेश्वर की ओर नहीं होना चाहते, उनके पास इस जीवन के बाद कोई आशा न रहेगी। वे उस मार्ग पर चल रहे हैं, जिसका अन्त बड़ा ही भयानक है। पवित्र बाइबल कहती है, कि उनके लिये केवल दन्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। (इब्रानियों १० : २७)। क्योंकि वे परमेश्वर की ओर नहीं हैं और उसके पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते, इसलिये वे प्रभु के उस महान् दिन के आने पर, जिस में वह सब मनुष्यों का न्याय करेगा, "प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे।" (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

परन्तु, क्या आप प्रभु की ओर हैं? वह आप से प्रेम करता है। उसने आपकी मुक्ति के लिये अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। वह आपके विषय में धीरजवन्त है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो, परन्तु उसकी इच्छा है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (२ पतरस ३ : ९)। वह चाहता है, कि आप उस में विश्वास करें, और अपने पापों से मन फिराएं, और अपने पापों की क्षमा के लिये उसके नाम से बपतिस्मा लें। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों

२ : ३८) । यदि आप विश्वास और आज्ञापालन के साथ प्रभु के पास आएंगे, तो वह आपको अन्धकार के वश से छुड़ाकर ज्योति के राज्य में प्रवेश कराएगा, जहाँ छुटकारा, अर्थात्, पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (कुलुस्सियों १ : १३)। आज आपके सामने एक बहुत बड़ा निश्चय है, अर्थात् क्या आप संसार के अन्धकार में रहना चाहते हैं या परमेश्वर की ज्योति में प्रवेश करना चाहते हैं ? जिस तरफ़ होने का निश्चय आज आप करेंगे वही आपकी आत्मा का अनन्त निवास होगा।

२

यदि मैं यीशु का प्रचार करूं

संसार में सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, वह है यीशु के सुसमाचार का प्रचार। क्योंकि यीशु का सुसमाचार हरएक मनुष्य के लिए उसके उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। सांसारिक दृष्टिकोण से, कोई मनुष्य शायद बड़े-से-बड़ा कलाकार बन जाए, या वह कोई एक बहुत बड़ा आविष्कार करले। या हो सकता है, वह संसार में एक सबसे बड़ा धनी मनुष्य बन जाए, या सबसे अधिक बुद्धिमान हो जाए। परन्तु एक दिन अवश्य ही उसका सम्बन्ध इन सब कामों से छूट जाएगा। व्यक्तिगत रूप से, उसे इन में से किसी भी वस्तु से अन्त में कोई लाभ प्राप्त न होगा। या जैसा कि प्रभु यीशु ने इस बात का निचोड़ निकालकर कहा, कि "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" (मरकुस ८ : ३६, ३७)। एक दिन अवश्य ही हमारे इस नाशमान् संसार का अन्त हो जाएगा। तब मनुष्य के हरएक काम का अन्त होगा; हरएक वस्तु जो मिद्यमान् है, सदा के लिये अनन्तकाल में लोप हो जाएगी। बड़े ही संक्षिप्त रूप में उस दिन का वर्णन करके पवित्र शास्त्र यूं कहता है, "उस दिन आकाश बड़ी ही हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" (२ पतरस ३ : १०)।

परन्तु जबकि सम्पूर्ण सृष्टि का ऐसा बड़ा अन्त होनेवाला है,

मनुष्य जो कि परमेश्वर के स्वरूप वा समानता पर सृजा गया है, और इसलिये एक आत्मिक प्राणी है, अनन्तकाल तक बना रहेगा। हां, मनुष्य की देह अवश्य ही मिट्टी में मिल जाएगी, परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से वह सर्वदा अनन्तकाल तक बना रहेगा। वहाँ, उस अनन्तकाल में, केवल दो ही तरह के स्थान होंगे, जिनमें से किसी एक में प्रत्येक मनुष्य, या यूं कहिए, कि आप और मैं, हमेशा-हमेशा तक रहेंगे। उन दो स्थानों को स्वर्ग और नरक कहा जाता है। स्वर्ग वह जगह है, जहाँ परमेश्वर और अनन्त सुख है। और नरक वह स्थान है, जहां अन्धकार और सदाकाल का रोना और पीड़ा और दांतों का पीसना है। स्वर्ग में केवल वही लोग होंगे, जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार के मार्ग को स्वीकार किया है और उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश पाया है। और परमेश्वर का वह मार्ग यीशु मसीह है। क्योंकि उस ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। परन्तु, जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार की योजना को स्वीकार नहीं किया है; और उसके पुत्र यीशु के सुसमाचार की आज्ञाओं का, जो हमारे उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है, (रोमियों १ : १६), पालन नहीं किया है, वे सब नरक में अनन्त विनाश के दन्ड के भागी होंगे। (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

सो इसीलिये, मैं ने आरम्भ में कहा, कि संसार में सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, वह है यीशु के सुसमाचार का प्रचार। इस से बड़ा काम संसार में और कोई नहीं है। क्योंकि यीशु का सुसमाचार एक ऐसी ताकत है, जो लोगों की आत्माओं को नाश होने से बचाता है, और स्वर्ग में अनन्त जीवन देता है।

परन्तु यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे क्या प्रचार करना चाहिए ? मुझे चाहिए, कि मैं आपको बताऊं, कि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यीशु का जन्म, परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं और

भविष्यद्वाणियों के अनुसार, बैतलहम नाम के एक नगर में हुआ था। (उत्पत्ति ३ : १५; यशायाह ७ : १४) जब उसका जन्म हुआ था, तो एक स्वर्गदूत ने प्रगट होकर यह ऐलान किया था कि "देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।" (लूका २ : ११)।

मुझे चाहिए, कि मैं आपको यीशु के आरम्भ के दिनों के बारे में बताऊं, कि पवित्र शास्त्र कहता है, "और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" (लूका २ : ४०)।

फिर, जब उसकी आयू लगभग तीस वर्ष की हुई तो वह यूहन्ना नाम के एक व्यक्ति के पास आया, और उस से यह कहकर बपतिस्मा लिया कि हमें इसी तरह से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। और जब वह बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया, तो उसके लिये आकाश खुल गया, और परमेश्वर की ओर से यह आकाशवाणी हुई "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" (मत्ती ३ : १३-१७)।

और तब, उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। वह चालीस दिन और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। "उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती ४ : १-४)।

फिर, यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे चाहिए कि मैं उसकी

उन अद्‌भुत और प्रभावशाली शिक्षाओं को आपको बताऊं जिन्हें सुनने के लिये लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पास इकट्ठा हो जाती थी, और वे उसके उपदेश सुनकर चकित होकर कहते थे कि यह एक अधिकारी की नाईं उपदेश देता है। (मत्ती ७ : २८, २९) । उस ने कहा, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है······धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" (मत्ती ५ : ३, ६) । "सावधान रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।" (मत्ती ६ : १) । "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती ६ : १९-२१) । "इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती ६ : ३३) ।

यीशु ने कहा, "मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।" (मत्ती ७ : ७, ८)। सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७ : १३, १४) ।

यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो न मैं केवल उसकी प्रभावशाली शिक्षाओं का ही बयान करूंगा; परन्तु मैं उसके सामर्थपूर्ण कामों के

बारे में भी अवश्य बताऊंगा। मैं आपको बताऊंगा, कि कैसे उसके एक हल्के से स्पर्श से ही अन्धे देखने लगते थे, लंगड़े चलने लगते थे, और हर तरह की बीमारीवाले लोग उसके द्वारा चंगे किए जाते थे। (मत्ती ४ : २३-२५; मत्ती ८ : १४-१६)। एक बार, झील में, जब वह अपने चेलों के साथ नाव पर सवार होकर यात्रा कर रहा था, तो एक ऐसा बड़ा तूफ़ान उठा कि नाव डूबने पर थी। उसके चेलों ने घबराकर कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं। तब उस ने उठकर आंधी और पानी को डांटा, और सब उसी घड़ी शान्त हो गया। (यूहन्ना ८ : २३-२७)। एक दिन उस ने कुल मुट्ठी भर भोजन अपने हाथ में लिया, और उसके द्वारा वहां एकत्रित हज़ारों लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को भोजन खिलाकर तृप्त किया। (यूहन्ना ६ : १-१४)। जब वह बैतनिय्याह नाम के एक गांव में आया, तो उसे मालूम हुआ, कि लाज़र नाम का उसका एक मित्र मर चुका है, और उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। तब वह लोगों के साथ उस कब्र पर आया और उसने लाज़र को पुकारा। और तब, उस की आवाज़ सुनते ही, जो मर गया था, वह कफ़न में हाथ पांव बन्धे हुए तुरन्त कब्र में से बाहर आ गया। (यूहन्ना ११ : ४३, ४४)।

फिर, यदि मैं यीशु का प्रचार करुं, तो मैं अवश्य ही आपको उसकी मृत्यु और गाड़े जाने, और मृतकों में से जी उठने के बारे में भी बताऊंगा। मैं आपको बताऊंगा, कि यह परमेश्वर की इच्छा थी, और इसी कारण उसने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा था, कि वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। (इब्रानियों २ : ९)। ताकि वह हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस के ऊपर चढ़ जाए, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं। (१ पतरस २ : २४)। सो परमेश्वर के पूर्व ज्ञान के अनुसार यीशु

को क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दन्ड दिया गया। जब वह मर गया, तो कुछ लोगों ने उसे लेकर एक कब्र में दफ़ना दिया। परन्तु उसके बाद उस समय लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने उसी यीशु को तीसरे दिन फिर से जीवित देखा। (मत्ती २८ : १-१०)।

यीशु का प्रचार करते हुए, मुझे चाहिए कि मैं आपको बताऊं, कि जी उठने के बाद वह चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा, और सैंकड़ों लोगों ने उसे देखा। (प्रेरितों १ : ३; १ कुरिन्थियों १५ : ६)। मुझे चाहिए, कि मैं आपको बताऊं, कि अन्त में स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले, उस ने अपने चेलों के पास आकर कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १८-२०)। मुझे चाहिए, कि मैं आपको बताऊं कि प्रभु ने कहा, कि इन बातों को सुनकर, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)। यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे चाहिए कि मैं ये सारी बातें आपको बताऊं। और तब, यह आपकी ज़िम्मेदारी हो जाती है कि आप उस में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा का पालन करें।

एक जगह हम देखते हैं कि जब फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया, तब खोजे ने सुनकर फिलिप्पुस से कहा, "देख, यहां जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?" "फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है : उस ने उत्तर

दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया।" (प्रेरितों ८ : ३५-३८)।

परन्तु, यीशु के सुसमाचार को सुनकर आप क्या करने जा रहे हैं ?

३

एक उदाहरण की प्रार्थना

मित्रो :

वे सब जो परमेश्वर से डरते और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं वे परमेश्वर के संतान हैं, और परमेश्वर के संतानों के पास अनेकों आशीषों के साथ-साथ एक विशेषाधिकार प्रार्थना करने का है। प्रार्थना का मनुष्य के जीवन में एक बड़ा ही विशेष स्थान है। प्रभु यीशु ने सिखाया कि हमें नित्य प्रार्थना करना चाहिए। (लूका १८:१)। प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के लोग अपने पिता के निकट आते हैं; और उस से बातें करते हैं। प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के लोग ऐसी शांति वा संतोष प्राप्त करते हैं जिसे संसार नहीं दे सकता। प्रभु यीशु मसीह के जीवन में पाई जानेवाली अनेकों अन्य विशेष बातों में प्रार्थना का एक महत्वपूर्ण स्थान था। वे लोग जो प्रभु यीशु के जीवन से परिचित हैं, वे इस बात से अनजान नहीं हैं, कि वह अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में प्रार्थना को सबसे प्रमुख स्थान देता था।

प्रार्थना के बारे में एक जगह उस ने शिक्षा देकर कहा कि "जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।" अर्थात्, लोग उनकी प्रशंसा करेंगे, और कहेंगे, कि अहा ! देखो, यह मनुष्य कितना धर्मी है। उनका प्रतिफल बस केवल इतना ही होगा, अर्थात् मनुष्यों की प्रशंसा ! प्रभु ने आगे कहा, "परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो

गप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।" यहाँ प्रभु का यह अभिप्राय नहीं है कि जब भी हम प्रार्थना करें तो हम एक कोठरी में जाकर द्वार बन्द करके ही प्रार्थना करें और केवल तभी पिता हमारी सुनेगा। परन्तु यहां, विशेष रूप से, प्रभु हमें प्रार्थना करने का एक सिद्धान्त बता रहा है, अर्थात्, जब हम प्रार्थना करें तो हमारी प्रार्थना में कोई दिखावटीपन न हो; हमारी प्रार्थना किसी मनुष्य को दिखाने के लिये न हो; हमारी प्रार्थना में ऐसे-ऐसे ऊंचे शब्दों का उपयोग न हो जिनका उपयोग मात्र किसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिये या कदाचित् मनुष्यों पर प्रभाव जमाने के लिये किया जाए। (देखिये मत्ती ६ : ५, ६)।

और फिर, प्रभु ने प्रार्थना करने का एक उदाहरण देकर कहा, "सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए: तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन।" (मत्ती ६ : ९-१३)।

यहां इस बात पर विशेष ध्यान दें, कि प्रभु ने कहा, कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, अर्थात् इस तरह से, इस प्रकार से। उसका कहने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं था, कि तुम इन्हीं शब्दों को बार-बार दोहराया करो, या इस प्रार्थना को रट लो और इसे बार-बार पढ़ा करो। परन्तु यहां वह प्रार्थना करने की उन्हें एक विधि बता रहा था, एक उदाहरण दे रहा था। क्योंकि जैसा कि हम पढ़ते हैं, कि चेलों ने उसके पास आकर निवेदन करके कहा था, कि प्रभु तू हमें प्रार्थना करना

सिखा। (लूका ११ : १)। सो प्रभु ने कहा, कि तुम इस रीति से या इस ढंग से प्रार्थना किया करो। मान लीजिए, कि मैं किसी ऐसे स्थान पर जाऊं जहां वे लोग हमारे संसार की अनेकों आधुनिक वस्तुओं से बिल्कुल अपरिचित हों। बातों ही बातों में मैं उनसे कदाचित् हवाई जहाज़ का वर्णन कर बैठूं, परन्तु क्योंकि वे हवाई जहाज़ के बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानते, तो वे मुझ से पूछते हैं कि मैं उन्हें हवाई जहाज़ के बारे में बताऊं। सो हवाई जहाज़ के बारे में बताने के लिये सबसे अच्छा उदाहरण जो मैं ले सकता हूं वह है एक पक्षी का, अर्थात् एक कौवा या चील। सो मैं उन्हें बताऊंगा, कि हवाई जहाज़ एक पक्षी की तरह पंख फैलाए हुए हवा में उड़ता है, या जैसे चील हवा में तैरती है इसी रीति से हवाई जहाज़ भी ऊपर उड़ता है। सो अब वे समझ जाते हैं कि जिस रीति से एक बड़ा पक्षी हवा में उड़ता है उसी रीति से हवा में उड़नेवाली एक मशीन को हवाई जहाज़ कहते हैं। अब वे किसी चील या कौवे को उड़ता हुआ देखकर उसे हवाई जहाज़ नहीं कहेंगे, परन्तु वे समझते हैं कि हवाई जहाज़ इसी रीति से उड़ता है। सो जब प्रभु यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो, तो उसके कहने का यह अर्थ कदापि न था कि तुम इसी प्रार्थना को रटकर बार-बार बोला करना, परन्तु उसने सिखाया कि तुम इस रीति से, या इस ढंग से, या इस तरह से प्रार्थना किया करो।

जब हम एक प्रार्थना को रट लेते हैं और उसी को बार-बार दोहराते रहते हैं, तो हमारी प्रार्थना अर्थरहित बन जाती है, फिर वह प्रार्थना न रहकर एक कविता बन जाती है। परन्तु हमारी प्रार्थना हमारे मन से निकलनी चाहिये। हमारी प्रार्थना एक टेप या रेकॉर्ड के समान नहीं होनी चाहिये, जिसे जब भी मशीन पर रखो तो एक ही सी बात सुनाई पड़ेगी। परन्तु हमारी प्रार्थना इस प्रकार से होनी चाहिए, जैसे कि छोटे-छोटे बालक, जो कि पूर्ण—रूप से अपने माता-पिता पर ही निर्भर

करते हैं, अपने पिता के सम्मुख अपने निवेदनों और आवश्यकताओं को प्रतिदिन रखते हैं।

जिस प्रार्थना के बारे में अभी थोड़ी देर पहिले हमने देखा, इसे अकसर लोग प्रभु की प्रार्थना कहते हैं। किन्तु वास्तव में यह प्रभु की प्रार्थना नहीं परन्तु एक उदाहरण की प्रार्थना है। इस प्रार्थना में हमें कुछ आवश्यक सिद्धांत मिलते हैं, जिन्हें हमें अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण रखना चाहिए, अर्थात्, कि वास्तव में हम सब का एक ही पिता है, जो कि स्वर्ग में है, और उसका नाम पवित्र है। जिस प्रकार से कि स्वर्ग दूत परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग में पूरी करते हैं, वैसे ही हमें भी प्रयत्न करना चाहिए कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूर्ण हो। और परमेश्वर ने अपनी इच्छा को हम पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया है, इसलिये यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसकी इच्छा को मानें। फिर, हमें अपने दिन-भर की रोटी के लिये ही प्रार्थना करनी चाहिए। अर्थात्, अपनी वर्तमान आवश्यकताओं के लिये, ताकि हम सदा परमेश्वर के ऊपर निर्भर बने रहें। फिर, हम अपने अपराधों की क्षमा के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, परन्तु केवल तभी जबकि पहिले हमने उन लोगों के अपराधों को क्षमा किया है जिन्होंने हमारे विरोध में कुछ अनुचित या अपराध किया हो। इस-लिये, क्योंकि प्रभु ने कहा, "यदि तुम मनुष्यों के अरपाध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" (मत्ती ६ : १४, १५)। फिर, हमें परमेश्वर से उसकी अगु-वाई और आशीष मांगनी चाहिए, कि हम नानाप्रकार की परीक्षाओं और बुराईयों से बच सकें। हमें मानना चाहिए कि जिस से हम प्रार्थना करते हैं, वह परमेश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का अधिकारी है, वह महापरा-क्रमी और महिमान्वित परमेश्वर पिता है।

एक बात पर और ध्यान दें, कि प्रभु ने उनसे राज्य के आने के

लिये भी प्रार्थना करने को कहा, अर्थात्, "तेरा राज्य आए।" उस समय प्रभु की कलीसिया की, जो कि प्रभु का राज्य है, स्थापना नहीं हुई थी, परन्तु उस ने प्रतिज्ञा करके कहा था कि वह उसे शीघ्र ही बनानेवाला है। (मत्ती १६ : १८-१९) । उसने अपने प्रचार के आरम्भ में भी इसी बात पर बल देकर कहा, "कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती ४ : १७) । और प्रभु ने अपने चेलों पर भी बड़े ही स्पष्ट रूप से प्रगट करके कहा, कि परमेश्वर का राज्य उनके जीवनकाल में ही सामर्थ सहित आएगा। लिखा है, "उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।" (मरकुस ९ : १) । परन्तु उस समय क्योंकि परमेश्वर का राज्य नहीं आया था तो प्रभु ने उन से कहा, कि तुम परमेश्वर के राज्य के आने के लिये भी प्रार्थना कर सकते हो।

परन्तु कुछ ही समय बाद, प्रभु की प्रतीज्ञा अनुसार, उसके चेलों के जीवनकाल में ही, प्रभु का राज्य सामर्थ सहित आया। यह घटना प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के दस दिन बाद यरूशलेम नगर में घटी। उस दिन तीन हजार लोग प्रभु की आज्ञा मानकर उसके राज्य, अर्थात् उसकी कलीसिया में शामिल हुए। प्रभु की कलीसिया ही उसका राज्य है। उसकी कलीसिया में सारे लोग उसकी प्रजा हैं, और प्रभु उनका राजा है, उसका नया नियम उसके राज्य की व्यवस्था, अर्थात् कानून है, जिसके अनुसार उसकी प्रजा चलती है, और उसके राज्य की सीमा सम्पूर्ण संसार है। क्योंकि उस ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। (मरकुस १६ : १५, १६; मत्ती २८ : १९) । आज कोई भी मनुष्य, प्रभु यीशु में

विश्वास करके और अपने पापों से मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर उसके राज्य में सम्मिलित हो सकता है।

आज हमें परमेश्वर से यह प्रार्थना नहीं करनी है कि उसका राज्य आए, क्योंकि उसका राज्य आ चुका है। परन्तु आज हमें यह प्रार्थना करनी है कि परमेश्वर के राज्य की उन्नति हो, अधिक से अधिक लोग उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके राज्य में शामिल हों और उसे मज़बूत बनाएं।

प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है कि परमेश्वर ने "हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।" (कुलुस्सियों १ : १३)। परमेश्वर आपको भी अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने पुत्र यीशु मसीह के राज्य में मिला सकता है, "जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों १ : १४)। क्या आप मन फिराकर उसकी आज्ञाओं को मानेंगे? परमेश्वर आपको अपने वचन पर चलने की शक्ति दे।

४

एकता की प्रार्थना

प्रभु यीशु के जीवन में एक बड़ी ही विशेष बात हम यह देखते हैं कि उसका जीवन एक प्रार्थनापूर्ण जीवन था। एक स्थान पर हम देखते हैं, कि वह स्वयं अपने लिये प्रार्थना करता है। एक अन्य स्थान पर हम देखते हैं, कि वह अपने शत्रुओं और बैरियों के लिये प्रार्थना करता है। फिर एक और जगह, हम देखते हैं कि वह अपने सब विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता है। यह वह समय था जबकि उसकी दर्दनाक मृत्यु उस से कुछ ही घन्टे परे थी। सो वह प्रार्थना के द्वारा अपने पिता के निकट आया, और बड़ी ही नम्रता के साथ उस ने पिता से निवेदन करके कहा, कि हे पिता, जो लोग अभी मेरे पीछे हो लिये हैं, "मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन सब के लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।" (यूहन्ना १७ : २०-२२)।

यहां हम देखते हैं, कि प्रभु की यह एक बड़ी ही इच्छा है, और उसने इस बात के लिये प्रार्थना भी की, कि वे सब लोग जो उस में विश्वास करते हैं, उस में एक हों। परन्तु जिस प्रकार की एकता की इच्छा प्रभु अपने लोगों से करता है, और जिस एकता के लिये उस ने मौत के साए में बैठकर प्रार्थना की, वह एकता केवल तभी आ सकती है जब कि उस के सारे

विश्वासी केवल एक ही नाम से कहलाएं, और एक ही सुसमाचार पर विश्वास करें, मानें और सिखाएं, और सब के सब केवल एक ही कलीसिया में हों। यदि इन बातों को नहीं अपनाया जाता, तो जिस एकता के लिये प्रभु यीशु ने प्रार्थना की वह वास्तव में कभी भी विद्यमान् नहीं हो सकती। सो हमारे लिये आज एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण और गम्भीर बात यह है कि हम वे आवश्यक कदम उठाएं जिनके फलस्वरूप उसी प्रकार की एकता आज प्रभु के विश्वासियों में आ जाए जिसकी इच्छा प्रभु रखता है। क्या हम उस प्रभु की प्रार्थना को पूरा करने में कुछ भी कसर उठा रखेंगे जिसने अपने खून की एक-एक बूंद हमारे छुटकारे के लिये बहा दी ताकि हम उसमें एक हों ? यह प्रश्न न केवल इसी दृष्टिकोण से आवश्यक है, कि वे सब लोग जो पहिले ही से प्रभु के विश्वासी हैं, उस में एक हों, परन्तु इसलिये भी कि भविष्य में वे सब जो मसीह के विश्वासी बनेंगे वे भी उसी एक देह के अंग बनें जिसका सिर स्वयं मसीह है।

प्रभु की इच्छानुसार, एकता लाने की ओर सबसे पहिला कदम जो उठाया जा सकता है, वह यह है, कि उसके सब विश्वासी लोग आरम्भ के विश्वासियों की तरह केवल एक ही नाम से कहलाएं। अर्थात्, जैसे कि हम पढ़ते हैं कि "चेले सबसे पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" (प्रेरितों ११ : २६)। आरम्भ में प्रभु के सारे विश्वासी केवल इसी नाम से, अर्थात् "मसीही" कहलाते थे। सो हम देखते हैं, कि जब प्रेरित पौलुस ने राजा अग्रिप्पा को यीशु का सुसमाचार सुनाया, तो उस ने सुनकर पौलुस से कहा, "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है।" (प्रेरितों २६ : २८)। यानी उस समय सभी लोग यह जानते थे कि मसीह के विश्वासी लोग "मसीही" कहलाते हैं, और यदि वे भी उसके विश्वासी बन जाएंगे तो वे स्वयं भी मसीही बन जाएंगे। फिर प्रेरित पतरस एक जगह कहता है, "और किसी दूसरे के द्वारा

उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरितों ४ : १२)। उद्धार केवल मसीह के नाम में है। यह वह नाम है जो सब नामों में श्रेष्ठ है। (फिलिप्पियों २ : ९-११; १ पतरस ४ : १६)। और जब हम अपने आप को "मसीही" कहते हैं तो हम इस नाम के द्वारा मसीह की महिमा करते हैं, और मसीह के नाम को ऊंचा उठाते हैं। परन्तु आज, प्रभु के विश्वासियों में सैकड़ों प्रकार के नाम प्रचलित हैं। क्या वे प्रेरित पतरस के साथ मिलकर यह कह सकते हैं कि "स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया" ? सो यदि हम प्रभु यीशु की प्रार्थना के उत्तर में एक होना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि सबसे पहिले हम हर एक अन्य नाम को अपने ऊपर से हटाकर केवल मसीह के नाम को ही अपने ऊपर रखें।

फिर, मसीही एकता के बारे में दूसरा आवश्यक कदम यह है, कि वे सब जो अपने आपको मसीही समझते हैं, अपने आपको इस प्रश्न के दृष्टिकोण से जांचे, कि मैं किस प्रकार से एक मसीही बना ? ऐसा मैं इसलिये कहता हूं क्योंकि इस बात पर अनेकों लोगों के अपने-अपने विचार हैं। जैसे कि, उदाहरण के रूप से, कुछ लोग अपने आपको केवल इसलिये मसीही समझते हैं, क्योंकि उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था, जिस में परिवार के सभी सदस्य प्रभु यीशु में विश्वास रखते थे, सो परिणामस्वरूप बड़े होकर वे भी "ईसाई" कहलाने लगे। फिर, कुछ लोग अपने आपको मसीही इसलिये कहते हैं, क्योंकि एक दिन उन्होंने प्रभु का संदेश सुना और वे विश्वास ले आए, सो वे फलस्वरूप अपने आपको मसीही कहने लगे। इसी प्रकार के अनेकों अन्य उदहारण भी दिये जा सकते हैं। परन्तु उन पर विचार न करके, मैं आपको यह बताना चाहता हूं, कि बाइबल के अनुसार मसीही बनने का केवल एक ही मार्ग है। हम देखते हैं, कि मुर्दों में से जी उठने के बाद प्रभु यीशु ने अपने

चेलों से मिलकर उनसे कहा, "यों लिखा है; कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।" (लूका २४ : ४६, ४७)। फिर, स्वर्ग में वापस जाते हुए, उस ने उन से कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)।

सो, यहां हम क्या देखते हैं ? अर्थात् यह, कि यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार किया जाएगा, और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। अब इस बात को ध्यान में रखकर, जब हम आगे देखते हैं, तो हमें मिलता है, कि जिस दिन सब से पहिली बार यीशु के सुसमाचार का प्रचार लोगों में किया गया, उस दिन यरुशलेम में सुननेवालों की एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा थी। और जब वे सुनकर विश्वास ले आए तो उन्होंने यीशु के चेलों से पूछा, "कि हे भाइयो हम क्या करें ?" और हम देखते हैं, कि जवाब में वे उन से यूं कहते हैं, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" (प्रेरितों २ : ३७, ३८)। और लिखा है, "सो जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए...... और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।" (प्रेरितों २ : ४१, ४७)। सो इस प्रकार से, हम देखते हैं, कि बाइबल के अनुसार मनुष्य एक मसीही केवल तभी बनता है, जब वह यीशु में विश्वास करता है और पापों से अपना मन फिराता है, और अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु के नाम से बपतिस्मा लेता है। इसके

अतिरिक्त, एक मसीही बनने का और कोई अन्य मार्ग नहीं है।

फिर, हम यह भी देखते हैं, कि वे जो इस प्रकार से उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था। अर्थात्, सभी लोग एक ही तरह से उद्धार पाते थे, और एक ही मन्डली में मिला दिये जाते थे। इसीलिये, उन लोगों की मन्डलियां "मसीह की कलीसियाएं" कहलाती थीं। (रोमियों १६ : १६)। उन लोगों की कलीसियाएं, आज की तरह, भिन्न-भिन्न नामों से नहीं कहलाती थीं। वे लोग न तो कैथलिक थे और न प्रोटेस्टैन्ट थे, परन्तु वे केवल मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य थे। (मत्ती १६ : १८)। उस समय, एक बार, जब कुछ लोगों ने मसीह के नाम की जगह कुछ अन्य नामों को लाने का प्रयत्न भी किया, तो प्रेरित पौलुस ने उनकी कड़ी निन्दा की और उन्हें डांटा। उस ने कहा, कि मुझे तुम्हारे बारे में बताया गया है, "कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, और कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया ? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया ? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला ?" (१ कुरिन्थियों १ : ११-१३)। और कुछ आगे चलकर, वह उन से फिर कहता है, "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया।" (१ कुरिन्थियों १२ : १३)। और वह देह मसीह की कलीसिया है, जिसमें सारे सदस्य देह के अंग हैं और मसीह देह का सिर है। (इफिसियों १ : २२, २३; कुलुस्सियों १ : १८)।

आज जबकि मसीह के विश्वासियों की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है, यह कितना आवश्यक है कि उसके सभी विश्वासी उसकी प्रार्थना के प्रत्युत्तर में उस में एक हों। एक ही नाम से कहलाएं,

एक ही सुसमाचार को मानें, और एक ही कलीसिया के अंग हों। तब, सचमुच में सारा जगत प्रतीति करेगा कि मसीह ही प्रभु है। क्योंकि एक साथ मिलकर जलनेवाले दियों का प्रकाश बहुत अधिक होता है। एकता में बल है, ताकत है, और कशिश है। इसीलिये प्रभु ने प्रार्थना करके कहा, "कि वे सब एक हों......इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।" मेरी आशा है, कि यदि आप प्रभु के एक विश्वासी हैं, तो आप उस के वचन के केवल एक सुननेवाले ही नहीं परन्तु उस पर चलनेवाले बनेंगे। (याकूब १ : २२)।

५

प्रवेश कौन करेगा ?

मित्रो :

मैं एक बार फिर से इस बात में बड़ी ही प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं कि परमेश्वर ने मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी है कि मैं आपका ध्यान बार-बार उसके बहुमूल्य वचन की ओर दिलाऊं। इस संसार में अनेकों ऐसी बातें हैं जिन में अकसर हम ऐसे लीन हो जाते हैं कि हम अपने सृष्टिकर्त्ता और उसके द्वारा सौंपे गए कर्त्तव्यों को लगभग भूल से जाते हैं। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि इस संसार में हम सब एक यात्री के समान हैं, जो कुछ समय के लिये एक देश से दूसरे देश को चला जाता है, और फिर वहीं वापस आ जाता है। पवित्र वचन कहता है, "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी।" (सभोपदेशक १२ : ७)। प्रेरित पौलुस कहता है, कि हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है। (फिलिप्पियों ३ : २०)।

परन्तु स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के कुछ विशेष नियम हैं। प्रभु यीशु ने एक स्थान पर कहा, "यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (लूका १८ : ३)। इसलिये, मनुष्य को चाहिए कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये, पाप से अपना मन फिराए और अपने आपको एक छोटे बालक की तरह अपने स्वर्गीय पिता के हाथों में उसकी इच्छा पर चलने के लिये सौंप दे। फिर, एक और स्थान पर प्रभु ने कहा, "कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।" (मत्ती १९ :

२३) । ऐसा उसने इसलिये कहा, क्योंकि धनी लोग अपने जीवन में सबसे प्रमुख स्थान अपने धन को देते हैं । इस बात का एक उदाहरण हमें नए नियम में एक बड़े ही धनी मनुष्य के जीवन में मिलता है । वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहता था, सो वह प्रभु के पास आया और उस ने प्रभु से पूछा, कि मैं स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये क्या करुं ? परन्तु जब प्रभु ने उस से कहा, कि तू अपना धन-सम्पत्ति त्यागकर मेरे पीछे हो ले और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा तो वह यह सुनकर बड़ा ही उदास हुआ और प्रभु के पास से चला गया । (मत्ती १९ : १६-२२) ।

प्रभु यीशु की एक बड़ी ही निश्चित शिक्षा यह थी कि "पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी ।" (मत्ती ६ : ३३) । परन्तु अभी जिस मनुष्य के बारे में हम ने देखा, उसका दृष्टिकोण स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के प्रभु यीशु के इस सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत था । किन्तु, इस प्रकार के दृष्टिकोण के साथ कोई भी मनुष्य स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा ।

फिर, प्रभु ने यह भी कहा कि "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश ने करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है ।" (मत्ती ७ : २१) । अर्थात्, कदाचित् कोई मनुष्य अपने आपको बड़ा ही धर्मी समझे, शायद वह हमेशा उठते-बैठते प्रभु का नाम भी ले, और उस से प्रार्थना भी करे, परन्तु यदि वह मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलता, उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, तो वह स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश न करेगा । यही कारण है, कि प्रभु ने एक जगह कहा, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो ?" (लूका ६ : ४६) । इसलिये, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना है । यदि हम परमेश्वर की बताई हुई प्रत्येक आज्ञा का पालन करते हैं तो हम जानते हैं,

कि हम अवश्य ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। और परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलने का अर्थ यह है, कि हम प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानेंगे, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी इच्छा को अपने पुत्र यीशु के द्वारा जगत पर प्रकट किया है। (इब्रानियों १ : १-२)। सो प्रभु यीशु ने कहा कि "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है। अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या कहूं, और क्या-क्या बोलूं। और मैं जानता हूं, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूं।" (यूहन्ना १२ : ४७-५०)। सो जो कुछ भी प्रभु यीशु हमें आज्ञा देता है, जब हम उसे मानते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं, और इसलिये हम जानते हैं कि हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। (मत्ती ७ : २१)।

परन्तु, प्रभु ने कहा कि "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" (लूका ९ : ६२)। अर्थात्, जो कोई उसकी आज्ञाओं को मानकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिये कदम उठा लेता है, परन्तु फिर पीछे देखने लगता है, अर्थात् सांसारिक बातो में उलझने लगता है, लोभ तथा अभिलाषाओं की ओर झुकने लगता है, ऐसे मनुष्य के लिये स्वर्ग के राज्य में कोई स्थान नहीं है।

फिर, प्रेरित पौलुस इस विषय में कहता है, "क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्त्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुष-

गामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।" (१ कुरिन्थियों ६ : ९, १०)। और फिर एक और जगह वह यूं कहता है, "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्त्ति पूजा, टोना बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे और-और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं, जैसा पहिले भी कह चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" (गलतियों ५ : १९-२१)।

और फिर, यूहन्ना ३ अध्याय में हम यूं पढ़ते हैं, "फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"

क्या आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं? तो आप को नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश नहीं कर सकता। जल और आत्मा से जन्म लेने का अभिप्राय यह है, कि जब हम यीशु मसीह की बातों को सुनते और उन्हें

मानते हैं, तो हमारा जन्म इस प्रकार से आत्मा से होता है, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं। (यूहन्ना ६ : ६३)। और जब हम आत्मा की शिक्षा अनुसार बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाते और उसमें से बाहर आते हैं, तो इस तरह से हमारा जन्म जल से होता है। इसीलिये प्रेरित पोलुस एक जगह कहता है, "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया।" (१ कुरिन्थियों १२ : १३)। और फिर एक और जगह वह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।" (रोमियों ६ : ३-४)।

अर्थात्, जब हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों से मन फिरा लेते हैं, यानी पाप के लिये मर जाते हैं, और फिर बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर गाड़े जाते हैं, तो हमारा पुराना मनुष्यत्व यीशु मसीह की मृत्यु की समानता में जुट जाता है। और फिर, इसी प्रकार से उस जल—रुपी—कब्र में से बाहर निकलकर हम यीशु मसीह के जी उठने की समानता में हो जाते हैं, ताकि आगे को पाप के वश में न रहें परन्तु नए जीवन की सी चाल चलें। इस प्रकार से, जल और आत्मा से नया जन्म लेकर मनुष्य स्वर्ग के राज्य के योग्य बन जाता है।

क्या आपने अपने पुराने मनुष्यत्व से छुटकारा पाकर नया जन्म प्राप्त कर लिया है ? यदि आप स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आपको नए जन्म की आवश्यकता है, क्योंकि प्रभु ने कहा, "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" प्रभु अपने वचन की ज्योति में चलने के लिये आपको साहस वा बल दे।

६

मूढ़ता की मृत्यु

संसार की किसी भी भाषा में "मृत्यु" एक बड़ा ही शोकजनक शब्द है। दूसरी ओर, मृत्यु एक ऐसी सर्वव्यापी वास्तविकता है, जिसे संसार के सभी लोग बिना किसी तर्क के स्वीकार करते हैं। परन्तु मृत्यु के ऊपर हम दो तरह से विचार कर सकते हैं, अर्थात् कुछ लोग मूढ़ता की मृत्यु मरते हैं और कुछ लोग बुद्धिमानी की मृत्यु प्राप्त करते हैं। मूढ़ता की मृत्यु के विषय में, पवित्र बाइबल का एक लेखक यूं कहता है, "मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं।" (भजन ४९ : २०)। अर्थात्, वे बिना किसी उद्देश्य के और बिना किसी आशा के मर मिटते हैं।

दूसरी ओर, बुद्धिमानी की मृत्यु में एक उद्देश्य होता है, एक आशा होती है। उदाहरण स्वरूप, जब यीशु की मृत्यु हुई तो उस अवसर पर देखनेवालों ने जो कुछ भी देखा, उन्हों ने देखकर कहा, "सचमुच, यह परमेश्वर का पुत्र था।" (मत्ती २७ : ५४)। उसकी मृत्यु में एक उद्देश्य था। अपनी मृत्यु से पूर्व, उस ने घोषित करके कहा था, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है······और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा।" (यूहन्ना १२ : २४, ३२)। ऐसा कहकर न केवल उसने इसी बात को प्रकट किया कि वह किस प्रकार की मृत्यु पाएगा, परन्तु उस ने यह भी बताया कि उसकी मृत्यु अनेकों लोगों के लिये जीवन

का कारण बनेगी। उसकी मृत्यु में एक कारण था। पवित्र बाइबल कहती है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं; उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (१ पतरस २ : २४)। यीशु की मृत्यु, वास्तव में एक उद्देश्यपूर्ण और आशापूर्ण मृत्यु थी।

फिर, हम स्तिफ़नुस नाम के एक व्यक्ति की मृत्यु के बारे में भी पढ़ते हैं। जिस परिस्थिति में स्तिफ़नुस की मृत्यु हुई वह इस प्रकार थी, जब वह लोगों के एक झुन्ड को उद्धारकर्त्ता यीशु के बारे में बता रहा था, तो लोगों ने उसकी बातों को पसन्द नहीं किया; वे उसके विरोध में उठ खड़े हुए और उसे पत्थरवाह करके मार डाला। इस घटना का वर्णन करके लेखक यूं बताता है, "और वे स्तिफ़नुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर। फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया।" (प्रेरितों ७ : ५९, ६०)। कितनी सुन्दर थी स्तिफ़नुस की मृत्यु! वह एक उद्देश्य के लिये मरा! उसे मृत्यु में एक आशा दीख पड़ती थी!

अपनी सेवा के अन्त में, जब प्रेरित पौलुस ने जान लिया कि अब उसकी मृत्यु निकट है, तो उस ने अपने एक साथी को पत्र लिखकर यूं कहा, "अब मैं अर्ध की नाईं उन्डेला जाता हूँ, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४ : ६-८)। पौलुस की मृत्यु में एक आशा थी, क्योंकि उस ने अपना उद्देश्य पूरा

कर लिया था। उसके लिये मृत्यु एक शोकपूर्ण अन्त नहीं परन्तु एक आनन्दमय जीवन का आरम्भ था। वह एक बुद्धिमान मनुष्य की तरह मरा।

परन्तु जबकि बाइबल में हम इस प्रकार से सुन्दर तथा बुद्धिमानी से मरनेवाले लोगों के बारे में पढ़ते हैं, दूसरी ओर, हमें कुछ ऐसे लोगों के बारे में भी मिलता है जो एक मूढ़ व्यक्ति की नाईं मरे। ऐसे लोगों के ऊपर विचार करते हुए सबसे पहिले मेरा ध्यान अब्नेर की ओर जाता है। अब्नेर शाऊल राजा का प्रधान सेनापती था परन्तु वह एक मूढ़ की नाईं मरा। प्राचीन कनान देश में छः शरणनगरों को ठहराया गया था। इन शरणनगरों को इसलिये ठहराया गया था कि देश में जो कोई किसी को भूल से मारके ख़ूनी ठहरे तो वहां भाग जाए और शरणनगर में रहते हुए उसकी कोई हानि नहीं कर सकता था। सो ऐसा हुआ कि एक दिन अब्नेर ने अपनी सुरक्षा के हित में असाहेल नाम एक व्यक्ति को मार डाला। (२ शमूएल २ : २३)। तत्पश्चात् वह पास के शरणनगर की ओर भाग गया। जब वह नगर के द्वार पर आया तो उसने सोचा कि कदाचित् अब वह पूर्ण सुरक्षित है। परन्तु योआब, असाहेल का भाई, अब्नेर का पीछा करता हुआ आया, और उस से बड़ी ही नम्रता से बातचीत करके वह उसे एकान्त में अलग ले गया और उसे धोखा देकर मार डाला। वह सुरक्षा के पास तो था परन्तु उसके भीतर नहीं था, वह बहुत ही निकट था, परन्तु तौभी बड़ी दूर था। कितने ही लोग आज भी ठीक इसी परिस्थिति में हैं! दाऊद, जो कि वहां का नया राजा बना था, अब्नेर की कब्र तक उसके शव के पीछे-पीछे यूं विलाप करता चल रहा था, "क्या उचित था कि अब्नेर मूढ़ की नाईं मरे?" (२ शमूएल ३ : ३३)।

आज हमारे समय में भी अनेकों लोग इसी तरह के हैं जिनकी मृत्यु एक मूढ़ की नाईं होगी, क्योंकि वे अन्धकार के राज्य

की सीमा को लांघकर ज्योति के राज्य के भीतर प्रवेश करने के महत्त्व को पहिचानने में असफ़ल रह जाते हैं। बहुतेरे कदाचित् उसके पास हों, शायद बिल्कुल ही निकट हों, परन्तु सुरक्षा फाटक पर ही नहीं उसके भीतर है। मनष्य पापी है और वह परमेश्वर की महिमा से रहित और अनन्त-मृत्यु दन्ड का भागी है। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अनन्त मृत्यु दन्ड से बच निकलने के लिये एक शरण-स्थान बनाया है, और हमारा वह शरण-स्थान है यीशु मसीह। इसलिये लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" (रमियों ८ : १)। प्रश्न यह नहीं है कि आप उसके कितने निकट हैं, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आप उसके भीतर हैं ? क्योंकि उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं जो मसीह यीशु में हैं। परन्तु मैं कैसे मसीह में हो सकता हूं ? पवित्र पुस्तक का लेखक कहता है, "क्योंकि, तम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। इसके अतिरिक्त मसीह के भीतर होने का और कोई अन्य मार्ग नहीं है।

फिर हम बाइबल के पुराने नियम में नादाब और अबीहू नाम के दो भाईयों के बारे में पढ़ते हैं। ये दोनों व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर के याजक थे। परन्तु जिस परिस्थिति में उन दोनों की मृत्य हुई उसे दृष्टिकोण में रखकर हम दाऊद की तरह उनके विषय में यूं कह सकते हैं, क्या उचित था कि नादाब और अबीहू मूढ़ की नाई मरें ? क्योंकि वे दोनों याजक थे, इसलिये उनका कर्त्तव्य था कि व्यवस्था की रीति अनुसार वे यहोवा के सम्मुख आरती दें। सो हम देखते हैं, "तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उस में धूप डालकर उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख आरती

दी। तब यहोवा के सम्मुख से आग ने निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया और वे यहोवा के सामने मर गए।" (लैव्यव्यवस्था १० : १, २)। वास्तव में जिस आग की आज्ञा इस काम के लिये परमेश्वर ने दी थी वह वेदी के ऊपर से होनी चाहिए थी। (लैव्य० १६:१२)। परन्तु, प्रत्यक्ष ही है, कि नादाब और अबीहू का तर्क यह था, कि आग तो आग ही है सो क्यों न कहीं से भी ले ली जाए। वे इस बात को देखने में असफल रहे कि परमेश्वर की किसी भी आज्ञा में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं लाया जा सकता। जबकि उस ने हमें विशेष रूप से कोई काम करने के लिये आज्ञा दी है, तो हमें कोई अधिकार नहीं कि हम उसके ऊपर अपने दृष्टिकोण से विचार करें या उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करें।

यह ठीक है, कि हम आज नादाब और अबीहू की तरह पुराने नियम की व्यवस्था के भीतर नहीं रह रहे हैं, परन्तु तौभी, जैसे कि प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है कि "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं।" (रोमियों १५ : ४)। इसलिये, नादाब और अबीहू की घटना हमारे लिये एक बहुत बड़ा दृष्टान्त है, वह हमारे लिये एक बहुत बड़ी शिक्षा है। अर्थात् जब परमेश्वर हमें कुछ करने की आज्ञा देता है तो हम उस कार्य को ठीक उसी ढंग से करें जैसे कि वह चाहता है, न तो हम उस में कुछ घटाएं, ना बढ़ाएं और न कोई बदलाव लाएं। यद्यपि ऐसा करने में हमें कोई हानि या कुछ अनुचित प्रतीत न हो, तौभी हमें केवल वही करना चाहिए जो वह आज्ञा देता है। सो जब परमेश्वर कहता है, कि हम यीशु मसीह को उद्धारकर्त्ता मानकर उसमें विश्वास करें, तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। जब वह कहता है, कि हम अपने पापों से मन फिराएं, तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। और जब वह कहता है, कि हमें पापों की क्षमा के लिये, अर्थात् मसीह को पहिन लेने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। (यूहन्ना ३ :

१६; प्रेरितों १७ : ३०; प्रेरितों २ : ३८ तथा गलतियों ३ : २७) ।

क्या आवश्यकता है कि मनुष्य एक मूढ़ की नाईं मरे जबकि वह मसीह यीशु में होकर, पापों से मुक्त होकर एक बुद्धिमान की नाईं मर सकता है ? क्या आप उस समय यूं कह सकेंगे, "मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४ : ६-८)।

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि आप इन बातों को व्यर्थ जानकर टाल न देंगे, परन्तु आप इन पर पूरी गम्भीरता से विचार करेंगे। प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको समझ दे।

७

पाप और उस से छुटकारा

पाप संसार में मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है। संसार के किसी भी शहर में छपनेवाले समाचार पत्र को यदि हम उठाकर देखें तो सबसे पहिले हमारी दृष्टि किसी न किसी अपराध के समाचार पर पड़ेगी। संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां लोग हों और वह स्थान पाप-मुक्त हो। जहां कहीं भी हम चले जाएं अपराध तथा बुराई के साए हमें नहीं छोड़ते। और यहां तक, कि बुराई को देखने के हम इस सीमा तक आदी हो चुके हैं, कि बहुत सी बातें जो वास्तव में पाप हैं, हमें उन में कोई बुराई नज़र नहीं आती, हम उन्हें स्वाभाविक या आधुनिक कहकर, नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। परन्तु सुनिए, पाप हमारे नगरों में है, हमारे गांवों, कस्बों, और बस्तियों में है। पाप हमारे मुहल्लों में है, हमारे परिवारों में है, और हमारे जीवनों में है। जब हम यात्रा करते हैं तो हम पाप को देखते हैं, जब हम लोगों के बीच में बैठते हैं तो हमें बुराई दीख पड़ती है, और जब हम अपने ऊपर दृष्टि डालते हैं तो अपने आपको पाप के कोढ़ से भरा हुआ पाते हैं। इस में कोई संदेह नहीं कि "यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं : और हम में सत्य नहीं।" (१ यूहन्ना १ : ८)।

प्रभु यीशु ने कहा, "कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।" (यूहन्ना ८ : ३४)। और जबकि सबने पाप किया है, (रोमियों ३:२३), इसलिये प्रत्येक मनुष्य पाप का दास है। यह एक सच्चाई है, और इस से इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु मनुष्य किस तरह से

पाप का दास बनता है ? पवित्र शास्त्र का लेखक कहता है, "प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है, और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब १:१४, १५)। यहां इस बात पर ध्यान दें, कि हरएक मनुष्य अपनी ही अभिलाषा से खिचता है, अर्थात् अभिलाषा में एक ऐसा खिचाव होता है, एक ऐसी कशिश होती है, जो मनुष्य को अपनी ओर खींचती है, और धीरे-धीरे मनुष्य उसकी ओर खिचकर उसके भीतर फंस जाता है, यहां मनुष्य भारी परीक्षा में पड़ता है जिस में से निकलना उसके लिये बड़ा कठिन हो जाता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होती है, अर्थात् कार्यशील होती है। और मनुष्य पाप कर बैठता है। फिर, उस में से एकदम निकलकर वह पश्चात्ताप नहीं करता, मन नहीं फिराता, परन्तु पाप उसमें बढ़ता जाता है, और इस प्रकार मनुष्य अनन्त मृत्यु की फ़सल काटता है।

क्या आप ने कभी इस बात पर विचार किया है कि एक मछली किस प्रकार शिकारी के कांटे में फंसकर नाश होती है ? बिल्कुल ऐसे ही, जैसे मनुष्य पाप के भीतर फंसकर नाश होता है। एक शिकारी मछली पकड़ने जाता है, उसके पास डोर और बंसी होती है जिसके एक सिरे पर एक कांटा लगा होता है। उस कांटे में वह शिकारी एक ऐसी वस्तु फंसाता है जिसे देखकर उस मछली के मुंह में पानी आ जाए और उसके भीतर उसे प्राप्त करने की अभिलाषा जागृत हो जाए। अब वह शिकारी उसे पानी में डाल देता है और बैठकर अपने शिकार की प्रतिक्षा करता है। कुछ ही देर में एक मछली आती है, वह उस चाहने योग्य वस्तु को देखकर उसे प्राप्त करने की लालसा करने लगती है, उसकी अभिलाषा उसे खींचने लगती है। और वह धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, उसकी ओर खिचने लगती है। जैसे-जैसे वह उसके निकट आने लगती है वह उस वस्तु के सौंदर्य के जाल में फंसने लगती है। किन्तु अब उस से नहीं रहा जाता, सो वह उस पर झपट

पड़ती है परन्तु शीघ्र ही उसे पता चलता है कि वह एक कांटे में फंस चुकी है, अब वह उस में से निकलने के लिये छटपटाती है—किन्तु, अब बहुत देर हो चुकी है—वह सदा के लिये उस में फंस जाती है, और नाश हो जाती है। क्या यह आज संसार में प्रत्येक मनुष्य का एक वास्तविक चित्र नहीं है ?

मनुष्य पाप का दास है, वह अपना जीवन पाप में बिता रहा है। परन्तु उसके भीतर मनुष्य ने स्वयं अपने आपको फंसाया है, उसने पाप को दावत दी है कि वह आकर उसके भीतर राज करे, ठीक ऐसे ही जैसे कि यह उदाहरण में आपको देने जा रहा हूं। यह कहानी इस प्रकार है, एक बार एक अरब सौदागर था, वह अपने ऊंट पर सवार होकर किसी देश में व्यापार के लिये जा रहा था। मार्ग में जब रात हुई, तो सौदागर ने अपना तम्बु खड़ा करके उसके भीतर रात बिताने का निश्चय किया। उस ने ऊंट को बाहर तम्बु के पास ही बान्ध दिया और स्वयं भीतर जाकर विश्राम करने लगा। लगभग आधी रात का समय था, कि सौदागर को एक आवाज़ सुनाई पड़ी, यह आवाज़ उसके ऊंट की थी, जो कह रहा था, "मालिक, बाहर, बड़े ज़ोर की ठंड पड़ रही है, यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं अपना मुंह तम्बू के भीतर कर लूं ?" सौदागर ने कहा, "हां, हां, ठीक है, कर लो, इसमें क्या बात है। सौदागर यह कहकर सो गया। परन्तु अभी उसकी नींद गहरी भी न हुई थी, कि एकाएक उसे ऊंट की आवाज़ फिर सुनाई दी। इस बार वह कह रहा था, "मालिक, ठंड बढ़ती ही चली जा रही है, आज्ञा दें तो मैं अपना एक अगला पैर भी अंदर कर लूं ?" सौदागर ने कहा, "अच्छा भई ठीक है, कर लो।" यह कहकर वह फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु अभी उसने एक झपकी ही ली थी, कि उसे ऊंट की आवाज़ फिर तीसरी बार सुनाई पड़ी। ऊंट कह रहा था, "साहब, ठंड ने तो आज कमाल कर दिया, मालिक, एक बिनती और है, मुझे आज्ञा

दें तो मैं अपना दूसरा अगला पैर भी तम्बु के भीतर कर लूं ?" सौदागर ने उत्तर देकर कहा, "अच्छा, ठीक है, वह भी कर लो, कोई बात नहीं।" कहानी को लम्बा न करके, अन्त में यूं हुआ, कि सूरज अभी निकला भी न था, कि धीरे-धीरे पूरा का पूरा ऊंट तम्बू के भीतर आ खड़ा हुआ। कुछ देर बाद, जब सौदागर को कुछ दुर्गन्ध और घुटन सी महसूस होने लगी, तो उसने ऊंट की उपस्थिति का अनुभव किया। उसने ऊंट से कहा, बाहर चले जाओ, इस छोटे से तम्बु में इतनी जगह नहीं है। परन्तु ऊंट ने सौदागर को उत्तर देकर कहा, यदि आपको बुरा लग रहा है तो आप कृपा करके बाहर चले जाईए। कितने ही लोग आज इसी तरह पाप की दलदल में धंस चुके हैं, वे निकलना भी चाहते हैं तो निकल नहीं पाते, क्योंकि पाप के पंजे बड़े ही शक्तिशाली हैं।

और इसीलिये प्रभु यीशु ने कहा, "कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।" परन्तु फिर, प्रभु ने यह भी कहा, कि "सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना ८ : ३२)। मनुष्य को पाप से सत्य के सिवाय और कोई स्वतंत्र नहीं करा सकता। और वह सत्य है, यीशु मसीह। उस ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)। इसीलिये पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं (रोमियों ८ : १)। अर्थात् वे अन्धकार के वश से छुड़ाए जाकर ज्योति में प्रवेश कर चुके हैं।

प्रभु यीशु ने मनुष्य को पाप से मुक्त कराने के लिये अपने जीवन को बलिदान कर दिया उसके विषय में पवित्र शास्त्र यूं कहता है, "जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो

गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आपको दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों २ : ६-८)। वह आदि में परमेश्वर के साथ था, उसी के द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ, (यूहन्ना १ : १-३), परन्तु मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलाने के लिये वह स्वर्ग छोड़कर मनुष्यों के बीच में आ गया। उस ने, और केवल उसी ने, एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया। उस ने कहा, मैं पापियों का उद्धार करने के लिये आया हूं। (लूका १९ : १०)।

परमेश्वर ने उसे इसलीये भेजा था कि वह संसार में सारे मनुष्यों के लिये उनके पापों के निमित्त एक सिद्ध बलिदान ठहरे। परमेश्वर की मनसा थी कि वह एक क्रूस के ऊपर लटकाकर मार डाला जाए ताकि सब लोगों के लिये एक प्रायश्चित ठहरे। और जब समय पूरा हुआ, सो उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ा ताकि वे उसे दोषी ठहराकर मार डालें। वे उसे अदालत में ले गए, और उस पर झूठे दोष लगाए ताकि उसे मृत्यु दन्ड दिया जाए। परन्तु अदालत के हाकिम ने उस में कोई भी दोष न पाया और वह उसे छोड़ देना चाहता था। (यूहन्ना १८ : ३८)। परन्तु वास्तव में, यीशु परमेश्वर की ओर से दोषी ठहराया जा चुका था। वह हमारे पापों के लिये दोषी था। परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से मुक्त कराने के लिये यीशु को मनुष्य के पापों के लिये जिम्मेदार ठहराया था, और हमारे पापों के लिये उसे दोषी ठहराकर उस ने उसे क्रूस की मृत्यु के हवाले कर दिया था। सो प्रेरित कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। परमेश्वर की मनसा के अनुसार यीशु क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया। अपनी मृत्यु के समय यीशु ने कहा था, "पूरा हुआ।" अर्थात्, मनुष्य के उद्धार के जिस काम को करने के लिये वह पृथ्वी पर आया था वह उसने क्रूस पर अपनी दर्दनाक मृत्यु के द्वारा पूरा किया।

परन्तु तीसरे दिन जब यीशु मुर्दों में से जी उठा, तो उसने प्रमाणित कर दिया कि वह एक मरा हुआ नहीं परन्तु एक जीवता उद्धारकर्त्ता है। जब वह स्वर्ग में वापस जा रहा था तो उस ने अपने चेलों से कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)। क्या आप यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करना न चाहेंगे? यीशु ने अपने लोहु की कीमत देकर आपके छुटकारे का दाम भर दिया है। यदि आप उस में विश्वास करेंगे और अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, तो वह आपको पाप के वश से छुड़ाकर आज़ाद करेगा।

उद्धार का अभिप्राय

हमारी भाषा में "उद्धार" एक बड़ा ही शान्तिदायक शब्द है। मनुष्य अपने मन में उद्धार पाने की इच्छा रखता है। हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, कि उस ने न केवल हमें यही बताया है कि मनुष्य पापी है और एक ऐसे मार्ग पर चल रहा है जिसका अन्त सदा का नाश है, परन्तु उस ने मनुष्य पर इस बात को भी प्रकट किया है कि वह किस प्रकार से अपने पापों से उद्धार प्राप्त करके अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है। एक बड़े ही ध्यान देने योग्य बात यह है, कि परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार की अपनी योजना को इस प्रकार से प्रगट किया है कि संसार में भोले-भाले और साधारण लोग भी उसे आसानी से समझ सकें। उस ने अपने भक्तों को पवित्रात्मा के द्वारा प्रेरणा दी ताकि वे उसकी उद्धार की योजना को ऐसे-ऐसे उदाहरणों वा शब्दों के द्वारा व्यक्त करें जिनका उपयोग साधारणत: हमारे दिन-प्रति-दिन के जीवन में होता है। परन्तु वे सब हमारा ध्यान एक ही बात के ऊपर दिलाते हैं, कि मनुष्य परमेश्वर से दूर और अलग है, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य पापी वा अधर्मी है (यशायाह ५९ : १-२); और फिर हम देखते हैं, कि किस प्रकार से दया और अनुग्रह से परिपूर्ण परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के द्वारा हमें बचाता है।

इस विषय में सबसे पहिला उदाहरण जो हम लेते हैं वह इस प्रकार का है, जिस में हम परमेश्वर को एक न्यायी के समान और मनुष्य को एक अपराधी और व्यवस्था के तोड़नेवाले के समान पाते हैं।

अपने अपराधों के कारण मनुष्य दोषी है, और इस कारण उसे अवश्य ही नरक का दन्ड मिलेगा। परन्तु जब बचने की कोई आशा न रही, तो निष्पाप वा निष्कलंक यीशु ने मनुष्य के पापों को अपने ऊपर लेना स्वीकार कर लिया, उस ने मनुष्य की जगह अपने आप को मरने के लिये दे दिया, और मनुष्य को अनन्त मृत्यु के दन्ड से बचा लिया। पवित्र वचन कहता है, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा···सो जब कि हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ?" (रोमियों ५ : ६-९)। मनुष्य परमेश्वर के सामने एक अपराधी के समान खड़ा था, जिस पर दन्ड की आज्ञा हो चुकी थी, परन्तु यीशु ने अपनी इच्छा से मनुष्य के अपराधों को अपने ऊपर ले लिया और फलस्वरूप वह दन्ड सहा जो वास्तव में मनुष्य को मिलना चाहिए था। इसलिये, मनुष्य यीशु के क्रूस पर बहे लोहू के द्वारा धर्मी ठहरा, और क्योंकि वह यीशु के लोहू के द्वारा धर्मी ठहरा, इसलिये अब परमेश्वर के सामने वह एक अपराधी के समान नहीं, परन्तु एक धर्मी के समान आता है। परमेश्वर की दृष्टि में वह अब एक अपराधी नहीं परन्तु एक धर्मी मनुष्य है, क्योंकि उसके अपराधों का दन्ड भरा जा चुका है; उसके पापों के दाग यीशु के लोहू में धोए जा चुके हैं। मसीह के कारण, और उस व्यक्ति के उस विश्वास के कारण जो यीशु मसीह में है, परमेश्वर अब उस मनुष्य के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कि उसने कभी कोई पाप किया ही न हो। इसीलिये लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों ८ : १)। अर्थात्, यीशु मसीह में होने के कारण वह मनुष्य परमेश्वर की नज़र में एक नई सृष्टि है, एक नया मनुष्य है !

इस सच्चाई को भी प्रभु यीशु ने एक जगह बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रगट करके इस तरह बताया ; कि एक मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से एक ने अपने पिता की संपत्ति का भाग उस से मांग लिया, और

फिर वह संप्रत्ति का अपना भाग लेकर एक दूर देश में जा बसा। वहां उसने सारा धन बुरे कामों में और कुकर्म में उड़ा दिया, और कुछ ही दिन में वह बिल्कुल कंगाल हो गया। जब उसके सारे कपड़े फट गए, और वह भूखा मरने लगा, और यहाँ तक कि उसका जीवन पशुओं का सा हो गया, तब उसे चेत आया कि मैं ने अपने पिता का विरोध करके कितना भारी अपराध किया है। और तब उस ने अपने मन में पश्चात्ताप करने का निश्चय किया, सो उसने कहा, "मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा, कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले।" और जब वह इस निश्चय के साथ अपने पिता के घर की ओर चला, तो अभी वह दूर ही था, कि उसका पिता जो प्रतिदिन उसकी राह देखा करता था, उसे देखकर दौड़कर उसके पास आया, उस ने उसे गले लगाया, उसे चूमा, और अपने दासों को आज्ञा देकर कहा, कि उसे अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर पहिनाओ और बहुत बढ़िया सा भोजन तैयार करो ताकि हम सब मिलकर आनन्द मनाएं, "क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है: खो गया था, अब मिल गया है।" (लूका १५: ११-२४)।

सो जब कोई मनुष्य यीशु मसीह में होकर परमेश्वर के पास आता है, तो परमेश्वर उसके साथ ठीक ऐसा ही व्यवहार करता है। वह उसे दोषी नहीं ठहराता, परन्तु प्रेम के साथ उसे यह कहकर स्वीकार करता है, कि मेरा यह पुत्र जो पहिले मर गया था, फिर जी गया है: यह खो गया था, अब मिल गया है।

उद्धार प्राप्त करने का अभिप्राय न केवल धर्मी ठहरने से है, परन्तु इसका अर्थ दो विरोधी पक्षों में मेल की स्थापना होना भी है। उद्धार के विषय में इस दृष्टिकोण से विचार करने पर हमारा ध्यान इस बात

पर जाता है कि मनुष्य परमेश्वर से दूर होकर उसके विरोध में अपना जीवन बिता रहा है। उसकी आवश्यकता है कि वह परमेश्वर के साथ अपने टूटे सम्बन्ध को फिर से स्थापित करे, और परमेश्वर का मित्र बन जाए। परन्तु यह किस प्रकार से हो सकता है? पाप के रहते हुए मनुष्य किस तरह से अपने घिनौने हाथ परमेश्वर की ओर मित्रता के लिये बढ़ा सकता है? या कौन सी ऐसी वस्तु है जिसे मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये उसके पास ला सकता है? मनुष्य की इस भारी आवश्यकता को स्वयं परमेश्वर यह कहकर पूर्ण करता है कि "पिता की प्रसन्नता इसी में है कि......क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा......अपने साथ मेल मिलाप कर ले।" (कुलुस्सियों १ : १६-२०)। क्योंकि यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा बीच में आए उस बैर को नाश कर दिया जिसके कारण मनुष्य परमेश्वर का शत्रु हो गया था। (इफिसियों २ : १६) सो जब हम यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो जाता है।

फिर इसका अर्थ यह भी है, कि मनुष्य का एक बड़ा कर्ज़ा, जिसे चुकाने के लिये उसके पास सामर्थ न थी, उसे क्षमा किया गया। इस बात को और भी सरल ढंग से समझाने के अभिप्राय से प्रभु यीशु ने एक उदाहरण देकर यूं कहा, कि एक राजा था, जब वह लेखा लेने लगा, तो उसके सामने एक जन लाया गया जिस ने राजा का कई लाख रुपए का कर्ज़ा चुकाना था। यदि राजा चाहता तो उस व्यक्ति को भारी दन्ड दे सकता था, परन्तु उस व्यक्ति के क्षमा-याचना करने पर, उसने उसका सारा कर्ज़ा क्षमा कर दिया। (मत्ती १८ : २३-२७)। मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर का कर्ज़दार था। परन्तु यीशु मसीह में उस ने हमारा सारा कर्ज़ा क्षमा कर दिया। परमेश्वर का वचन इसे पापों की क्षमा कहता है। यह कर्ज़ा इतना बड़ा था कि इसे

हम स्वयं कभी भी नहीं चुका सकते थे। यह कर्ज़ा धन वा सम्पत्ति से नहीं चुकाया जा सकता था, क्योंकि परमेश्वर का वचन घोषित करके कहता है कि "बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।" (इब्रानियों ६ : २२)। और मनुष्य का लोहू पाप से अशुद्ध था। और "यह अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।" (इब्रानियों १० : ४)। इसलिये परमेश्वर के पुत्र, यीशु का लोहू बहाया गया ताकि मनुष्य के पाप क्षमा किए जाएं। (मत्ती २६ : २८)।

और फिर उद्धार का अर्थ छुटकारे से भी है। कहा जाता है, कि रोमी साम्राज्य के भीतर लगभग आधी प्रजा दासत्व में थी। दासत्व एक ऐसी प्रथा थी जिस से आज हम परीचित नहीं हैं। परन्तु उस समय यह जीवन की दिन-प्रतिदिन की एक सच्चाई थी। प्रत्येक दास अपने मन में उस दिन की बड़ी लालसा के साथ प्रतीक्षा करता था कि जब वह अपने स्वामी की संपत्ति न रहकर स्वतंत्र हो जाए। अकसर ऐसा किसी व्यक्ति की दया के फलस्वरूप ही होता था, जब वह दास के स्वामी को दास की उचित कीमत देकर उसे स्वतंत्र करा देता था, अन्यथा वह दास एक दास ही रहता था, और जब उसके स्वामी को उस से कोई लाभ न होता था तो वह उसे किसी और के हाथों बेच देता था। परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो पाप में अपना जीवन बिता रहा है शैतान का दास है। क्योंकि "जो कोई पाप करता है" प्रभु यीशु ने कहा, "वह पाप का दास है।" (यूहन्ना ८ : ३४)। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उस ने हम से ऐसा प्रेम किया, कि हमें पाप के दासत्व से छुड़ाने के लिये उस ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को दे दिया (यूहन्ना ३ : १६), ताकि क्रूस पर बहे उस के लोहू के द्वारा हमारे पापों की कीमत चुकाई जाए, और हमारा छुटकारा हो जाए। इसी कारण परमेश्वर का वचन कहता है कि तुम "दाम देकर मोल लिये गए हो" (१ कुरिन्थियों ६ : २०)। "क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बाप दादों से चला आता है उस से

तुम्हारा छुटकारा चान्दी, सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।" (१ पतरस १ : १८, १९)।

सो यदि हम यीशु मसीह में हैं, तो उसके द्वारा हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरते हैं; उसके द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल होता है; उसमें हमें पापों की क्षमा और छुटकारा प्राप्त होता है। (कुलुस्सियों १ : १३, १४)। "तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं ?" सो पवित्र वचन कहता है कि "यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" (प्रेरितों २ : ३९)। अर्थात्, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २ : ३८)। उद्धार परमेश्वर का एक दान है। क्या आप उसे प्राप्त करने के लिये विश्वास और आज्ञापालन के साथ उसके पास न आएंगे ? मेरी आशा है कि आप इतने बड़े उद्धार से वंचित रहना न चाहेंगे।

९

परमेश्वर का अद्भुत प्रेम

एक बड़ा ही प्रचलित वाक्य जो अकसर सुनने में आता है वह इस प्रकार है, "परमेश्वर प्रेम है।" परन्तु हम किस तरह से जान सकते हैं कि परमेश्वर प्रेम है? केवल यह कह देने से कि परमेश्वर प्रेम है, वास्तव में यह बात प्रमाणित नहीं हो जाती कि परमेश्वर प्रेम है। अनेकों लोग जो इस वाक्य को कहकर और लिखकर व्यक्त करते हैं, इसका अर्थ वास्तव में नहीं जानते, कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है? कदाचित् कोई कहे, कि हम जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है, क्योंकि यदि वह हम से प्रेम नहीं करता तो इस संसार में भाँति-भाँति के जीवन उपयोगी साधन हमें कौन देता? उस ने हमें सुन्दर देह दी है, और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनेकों साधन जुटाए हैं। उस ने हमें बोने के लिये बीज दिया है; वह हमारे खेतों पर अपनी वर्षा भेजता है; उस ने हमारे खाने के लिये तरह-तरह के भोजन पदार्थ पैदा किए हैं; हम उसका पानी पीते हैं; वह अपना सूर्य हम पर चमकाता है; हम उसकी हवा में साँस लेकर जीते हैं। परन्तु क्या इन सब वस्तुओं से वास्तव में परमेश्वर का प्रेम हम पर प्रगट होता है? क्या जगत में मनुष्य के लिये खाने-पीने और ऐश-ओ-आराम से रहने के सिवाए और कुछ नहीं है? क्या मनुष्य के लिये संसार में अच्छे से अच्छा खाना और सुख-चैन से रहना ही सब कुछ है?

हम सब जानते हैं कि एक दिन अवश्य ही मनुष्य को इस धरती को और इस जगत की सारी भौतिक वस्तुओं को सदा के लिये छोड़-

कर जाना पड़ता है। उसके साथ कोई भी वस्तु नहीं जाती, वह अकेला जाता है—केवल उसकी आत्मा। वह इस संसार के भौतिक वातावरण से दूर होकर, आत्मिक वातावरण में चला जाता है, जहां उसकी आवश्यकताएं भौतिक नहीं परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण की होती हैं। परन्तु वहां, यदि वह उद्धार के वस्त्रों से सुसज्जित न पाया जाए, यदि उसकी आत्मा उद्धार के आत्मिक भोजन से तन्दरुस्त न हो, तो उस आत्मिक संसार में उसका कष्ट कितना बड़ा होगा! क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है? प्रभु यीशु ने ऐसे मनुष्य की स्थिति को दर्शाने के अभिप्राय से कहा, कि परमेश्वर ऐसे मनुष्य के विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देकर कहेगा कि "उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना और दांत पीसना होगा।" (मत्ती २२ : १३)। और यह दन्ड अनन्त दन्ड होगा, जिसका कभी अन्त न होगा। (मत्ती २५ : ४६)।

सो यदि परमेश्वर प्रेम है, तो क्या उसने मेरे उद्धार के लिये कुछ किया है? क्या वह मेरे से वास्तव में प्रेम करता है, और मुझे अनन्त मृत्यु-दन्ड से बचाकर अनन्त जीवन में प्रवेश दिलाने के लिये तैयार है? बहुतेरे लोगों का विचार है, कि परमेश्वर प्रेम है, परन्तु उद्धार प्राप्त करने के लिये मनुष्य को स्वयं ही अपने पापों का दन्ड भोगना आवश्यक है। उनके विचार में, प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने पापों का दण्ड स्वयं भुगतने के बाद ही उद्धार प्राप्त कर सकता है। परन्तु प्रश्न यह है, कि परमेश्वर, जो कि प्रेम है, क्या मुझे मेरे पापों का दन्ड दिये बिना नहीं बचा सकता? यह बिल्कुल उचित है, न्यायानुसार, कि पाप का दन्ड अवश्य ही मिलना चाहिए। परन्तु यदि परमेश्वर मनुष्य को पाप के दन्ड से नहीं बचा सकता, तो यह कहने के विपरीत कि परमेश्वर प्रेम है, यूं कहना अधिक उचित होगा, कि परमेश्वर न्याय है।

अनेकों लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिये अकेले

जंगलों वा पहाड़ों में निकल जाते हैं, वहां वे भूखे-प्यासे रहकर अपने आप को तरह-तरह के कष्ट देते हैं। उनके विचार अनुसार, इस प्रकार वे अपने पिछले पापों का कर्ज़ा चुकाकर उद्धार में प्रवेश पा लेते हैं। परन्तु इस में मैं परमेश्वर का प्रेम नहीं देखता। क्योंकि यदि मनुष्य को स्वयं ही दुख उठाकर अपने पापों का कर्ज़ा भरना है, तो फिर परमेश्वर प्रेम कैसे ठहरा ? वह तो वास्तव में केवल एक न्यायी ठहरा।

परन्तु मान लीजिये, यदि कोई पिता अपने बालक को यह आदेश देकर जाता है, कि रात मैं बड़ी देर से घर लौटूंगा और तुम घर के भीतर द्वार बन्द करके रहना और बाहर बिल्कुल मत निकलना, क्योंकि बाहर खतरा है। किन्तु वह बालक पिता की आज्ञा को हल्की सी बात जानकर अन्धेरे में बाहर निकल जाता है, और कुछ ही देर में वह एक भारी कठिनाई में फंस जाता है। अब जब उसका पिता आधी रात के बाद घर लौटता है तो अपने बालक को घर में न पाकर वह यह नहीं कहता, कि मैंने उसे घर से बाहर निकलने को मना किया था, परन्तु उसने मेरी आज्ञा नहीं मानी, सो अब यदि वह किसी कठिनाई में फंस गया है तो अपनी ही गलती से फंसा है, उसे दुख उठाने दो, उसे अपने किए का दन्ड अवश्य ही मिलना चाहिए। परन्तु इसके विपरीत, वह बड़ा चिन्तित हो जाएगा। वह जानता है कि उसके बालक ने उसकी आज्ञा तोड़ी है, परन्तु यह कहने के विपरीत, कि उसे अपने किए का फल स्वयं भोगने दो, वह एकदम उसे ढूंढ़ने और बचाने के लिये निकल पड़ेगा। उसे बचाने के लिये वह स्वयं कष्ट उठाएगा, वह मीलों उसे ढूंढ़ने के लिये इधर-उधर जाएगा, वह अपने बालक को ढूंढ़ने वा बचाने के लिये सब कुछ करने और देने के लिये तैयार हो जाएगा, यहां तक कि वह अपने प्राणों को भी जोखिम में डालने से न रुकेगा।

सो जबकि हम शारीरिक होकर अपने बालकों के साथ ऐसा

व्यवहार करना जानते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता, जो प्रेम है, इस से बढ़कर हमारे साथ क्यों न करेगा? सो यह जानते हुए कि परमेश्वर प्रेम है, क्यों हम ऐसा सोच लेते हैं कि हमें अपने पापों में नाश होना आवश्यक है? क्यों हम ऐसा सोचते हैं कि हमें स्वयं अपने पापों का फल भुगतना आवश्यक है? जबकि हमारा परमेश्वर कहता है, "परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा, वरन जीवित रहेगा। उस ने जितने अपराध किए हों, उन में से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा; जो धर्म का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?" (यहेजकेल १८ : २१-२३)।

अपनी एक पत्री में यूहन्ना नाम का प्रभु का एक प्रेरित लिखकर कहता है, "हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" वह न केवल यही बताता है कि परमेश्वर प्रेम है, परन्तु यह भी कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है। सो वह आगे कहता है, "जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : ७-१०)। सो यहां हम देखते हैं, कि किस प्रकार से परमेश्वर प्रेम है।

आप शायद बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ लें, लम्बी-लम्बी यात्राएं कर लें,

ऊंचे-ऊंचे तर्क कर लें, परन्तु इस प्रश्न का उचित उत्तर आपको कहीं पर भी न मिल सकेगा, कि परमेश्वर क्योंकर प्रेम है। परमेश्वर का प्रेम वास्तव में हमें केवल एक ही जगह मिलता है, और वह है क्रूस के ऊपर यीशु का बलिदान। वहां हम परमेश्वर के प्रेम को मनुष्य के प्रति उमड़ते हुए देखते हैं। वहां हम वास्तव में देखते हैं कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने इकलौते पुत्र को प्रत्येक मनुष्य के पापों के प्रायश्चित के लिये दे दिया। वहां हम देखते हैं कि "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ः ८)। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जगत का उद्धार करने के लिये भेजा। उसने उसके द्वारा लोगों के सामने बड़े-बड़े अद्भुत काम दिखाए, ताकि लोग विश्वास ले आएं कि वह वास्तव में परमेश्वर की ओर से आया है। फिर, परमेश्वर की इच्छा और मनसा के अनुसार, झूठे आरोपों के आधार पर यीशु पकड़वाया गया और उसे क्रूस के ऊपर लटकाकर कड़ी मौत की सजा दी गई। पवित्र बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने संसार के सारे लोगों के पापों को लेकर अपने पुत्र के ऊपर लाद दिया, और उन्हीं पापों के कारण यीशु को क्रूस की भयानक मृत्यु से मरना पड़ा। लिखा है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (१ पतरस २:२४)। मनुष्य पापी था और इसलिये दन्ड भी उसे ही मिलना चाहिए था, परन्तु क्योंकि परमेश्वर प्रेम है इसलिये उस ने मनुष्य के अपराध और दन्ड दोनों ही अपने ऊपर ले लिये। परमेश्वर ने कहा, मैं मनुष्य को पाप में नाश होने नहीं दूंगा; मनुष्य पाप के रहते मेरे पास नहीं पहुंच सकता, सो मैं स्वयं उसके पास नीचे पृथ्वी पर जाऊंगा; मैं उसके अपराधों को अपने ऊपर लेकर उसके पापों के कारण स्वयं दन्ड सहूंगा। और परमेश्वर के प्रेम की इसी योजना को हम यीशु के क्रूस

पर देखते हैं। वहां परमेश्वर संसार पर अपने प्रेम को प्रगट करके हम से कहता है, कि देखो, मैं ने तुम्हारे लिये कितने दुख सहे, मैंने तुम्हें बचाने के लिये अपने आप को दे दिया; मैंने तुम्हारा कर्जा भर दिया; मैंने तुम्हारा प्रायश्चित चुका दिया। इसीलिये, प्रभु यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११ : २८)।

क्या आप अपने पापों के बोझ से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं? आपके उद्धार का केवल एक ही मार्ग है, और वह है यीशु मसीह, जो आपके पापों का प्रायश्चित है। परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु में विश्वास करें, और पाप से अपना मन फिराएं, और यीशु के नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें; और इस प्रकार से अपने पुराने मनुष्यत्व को उतारकर यीशु को पहिन लें और एक नए जीवन की चाल चलें। (प्रेरितों २ : ३८; रोमियों ६ : ३-६; गलतियों ३ : २६, २७)। क्या आप परमेश्वर के प्रेम की पुकार का जवाब प्रेम के साथ न देंगे? प्रभु यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। (यूहन्ना १४ : १५)।

मित्रो, प्रभु आपसे प्रेम करता है, और आपके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिये उस ने स्वयं अपने आप को दे दिया, और वह चाहता है कि आप भी उस से प्रेम रखें और उस की आज्ञाओं को मानकर अपने प्रेम को उसके प्रति व्यक्त करें। अब जबकि आप इन बातों पर विचार करते हैं, परमेश्वर आपको आशीष दे।

१०

परमेश्वर की इच्छा से

मित्रो :

इस समय बहुतेरी ऐसी बातें हो सकती हैं जिनके ऊपर कदाचित् हम विचार करना चाहें। शायद आपके पास कोई पारिवारिक या व्यक्तिगत समस्या हो जिसके बारे में आप बात करना चाहें। या हो सकता है आपके पास कोई योजना हो जिसके विषय में आप विचार-विमर्श करने के इच्छुक हों। अनेकों राजनीति की बातें हैं, देश और विदेश की बातें हैं। शायद आप उत्सुक हों यह जानने के लिये कि चंद्रमा पर अगला रॉकेट कब जा रहा है, कितने लोग भविष्य में चंद्रमा पर पहुंचने का विचार कर रहे हैं ? अनेकों और बहुतेरी बातें हैं जिनके बारे में हम देख सकते हैं। परन्तु मेरे विचार में यदि हम अपने इस थोड़े से बहुमूल्य समय का बुद्धिमानी के साथ उपयोग करना चाहें, तो सबसे अच्छा यह होगा कि हम यीशु के बारे में देखें।

लगभग दो हज़ार वर्ष हुए जब यीशु नाम के एक बालक का जन्म पलस्तीन देश के एक छोटे से गाँव में हुआ था। यीशु के बारे में हम देखते हैं कि उसका जन्म परमेश्वर की इच्छा से हुआ था। उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व अनेकों भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की ओर से वचन पाकर लोगों को उसके जन्म के बारे में बताया था। इन भविष्यद्वाणियों के बारे में आज हम बाइबल के पहिले भाग, अर्थात् पुराने नियम में पढ़ते हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने न केवल यही बताया था कि यीशु का जन्म कब होगा, परन्तु उन्होंने यह भी प्रगट किया था, कि उसका जन्म किस प्रकार से होगा, और उसका पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य

होगा। और न केवल यही, परन्तु उन्हों ने यह भी बताया था कि यीशु किस प्रकार से मारा जाएगा, और फिर तीसरे दिन वह मृतको में से जी उठेगा, और फिर स्वर्ग में वापस उठा लिया जाएगा। और फिर, जब हम पुराने नियम की इन भविष्यद्वाणियों को पढ़ने के बाद बाइबल के दूसरे भाग, अर्थात् नए नियम को खोलकर पढ़ते हैं, तो हम वास्तव में देखते हैं कि वे सारी भविष्यद्वाणियां बिल्कुल ठीक वैसे ही पूरी हुईं।

मान लीजिए, यदि मैं आपको अनुमान लगाकर बताऊं कि पृथ्वी से अगला उपग्रह जब छोड़ा जाएगा तो क्या-क्या होगा, परन्तु मेरा अनुमान गलत सिद्ध हो सकता है। मान लीजिये, मैं अपने अनुमान से आपको बताऊं कि अमेरीका का अगला राष्ट्रपति कौन बनेगा, परन्तु मेरा अनुमान बिल्कुल गलत ठहर सकता है। या मान लीजिये, मैं आपको किसी राजनीति के प्रश्न पर अपने विचार बताऊं, परन्तु मेरे विचार गलत हो सकते हैं। परन्तु वे भविष्यद्वक्ता, जिनका वर्णन अभी मैंने आपके सामने किया, लोगों को अपने अनुमान नहीं बता रहे थे, वे केवल अपने विचार मात्र ही प्रगट नहीं कर रहे थे; परन्तु वास्तव में वे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (२ पतरस १ : २१)। और इसलिये, उन बातों के पूरा होने के सैंकड़ों वर्ष पूर्व उन्होंने जो कुछ भी कहा था, वह सब भविष्य में ठीक वैसे ही पूरा हुआ।

यूं तो यहाँ हम उन में से अनेकों भविष्यद्वाणियों का वर्णन कर सकते हैं, परन्तु इस थोड़े से समय में मैं विशेष रुप से आपका ध्यान यीशु से सम्बन्धित एक बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भविष्यद्वाणी पर दिलाना चाहूंगा। मेरी आशा है कि आप इस भविष्यद्वाणी के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनेंगे, और फिर, इसके बाद, जब हम उस वर्णन को पढ़ेंगे जो इस भविष्यद्वाणी के पूरा होने के सम्बन्ध में है तो आप उस

पर भी पूरा ध्यान देंगे। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं, कि यदि आप ऐसा करेंगे तो ये बातें यीशु को वास्तव में पहिचानने में आपके लिये सहायक सिद्ध होंगी; आप जानेंगे कि यीशु वास्तव में कौन है, उसका इस पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य था, उसका आपके जीवन में क्या महत्त्व है।

यीशु के जन्म से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व, उसके सम्बन्ध में भविष्यद्वक्ता ने यूं कहा था, "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया ? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ ? क्योंकि वह उसके सामने अंकुर की नाईं, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसे देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना।

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सबके सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय

चुपचाप शान्त रहती है वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया ? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसी ने उसको रोगी कर दिया......उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा......वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये बिनती करता है।" (यशायाह ५३)।

और अब हम देखेंगे कि यह भविष्यद्वाणी किस प्रकार आठ सौ वर्ष बाद यीशु में पूर्ण हुई। पवित्र बाइबल का लेखक इस घटना का वर्णन करके कहता है, "जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। और उन्हों ने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया।"

"जब यीशु हाकिम के सामने खड़ा था, तो हाकिम ने उस से पूछा; कि क्या तू यहूदियों का राजा है ? यीशु ने उस से कहा, तू आप ही कह रहा है। जब महायाजक और पुरनिये उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर पीलातुस ने उस से कहा, क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं ? परन्तु उस ने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां

तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था……हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं ? उन्हों ने कहा बरअब्बा को। पीलातुस ने उन से पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करुं ? सब ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। हाकिम ने कहा; क्यों उस ने क्या बुराई की है ? परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए"……इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।"

"……तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया……और आने-जानेवाले सिर हिला हिलाकर उसकी निन्दा करते थे।"

लेखक आगे बताता है, कि इन बातों के बाद, "दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?……तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए……और धरती डोल गई, और चट्टानें तड़क गईं……तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का पुत्र था"।"

"जब सांझ हुई तो यूसुफ़ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य, जो आप ही यीशु का चेला था, आया; उसने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। यूसुफ़ ने लोथ को लेकर उसे उज्जवल चादर में लपेटा। और उसे

अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया"।

और इस प्रकार उस भयानक दिन का अन्त हुआ। और, फिर दूसरा दिन गुज़रा। परन्तु तीसरे दिन एक बड़ी ही आश्चर्यपूर्ण घटना घटी; जिसे सुनकर सारा देश आश्चर्य में डूब गया। लिखा है, सब्त के दिन के बाद, अर्थात् शनिवार के बाद, सप्ताह के पहिले दिन, जब कुछ स्त्रियां कब्र को देखने आईं, तो एकाएक, "एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्जवल था। उसके भय से पहरुए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो; मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है।"

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि अब आप देख सकते हैं कि यीशु केवल एक मनुष्य मात्र ही नहीं था, परन्तु वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। उस ने स्वयं कोई अपराध न किया था जिसके कारण वह मारा जाता, परन्तु जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि "वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया।" यही परमेश्वर की योजना थी, कि यीशु के सिद्ध बलिदान से सारा जगत उद्धार पाए। स्वयं यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व यूं कहा था, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे,

वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३ : १६)।

अन्त में, मैं आपको यीशु की वह आज्ञा याद दिलाना चाहता हूं, जिसे उसने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले देकर यूं कहा था "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६:१६)। प्रभु का अनुग्रह आप पर बना रहे।

११

यीशु, एक महान् शिक्षक

मित्रो :

हमारे पास फिर से यह अवसर है कि हम उन महत्त्वपूर्ण बातों के ऊपर विचार करें जिनका सम्बन्ध हमारी आत्माओं से है। मैं आपके बारे में कुछ नहीं कहूंगा, न मैं अपने विषय में कुछ कहना चाहूंगा, परन्तु अपने कीमती समय को दृष्टिकोण में रखकर, मेरी इच्छा है कि मैं आपको उस व्यक्ति के बारे में बताऊं जिस ने आपको और मुझे हमारे पापों से मुक्ति दिलाने के लिये सब कुछ सह लिया, और यहां तक, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु को भी उठा लिया।

यूं तो यीशु का पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ था जिनका धन्धा बढ़ई का काम करने का था, परन्तु यीशु ने अपना अधिकांश समय परमेश्वर के कामों में, और प्रचार करने वा शिक्षा देने में ही लगाया। जब उसकी आयु बारह वर्ष की थी तो उसके घरवालों का विचार था कि उसे घर में ही रहना चाहिए। परन्तु एक दिन उसे घर में न पाकर वे बड़े चिन्तित हुए और उसे ढूंढ़ने निकल पड़े। बहुत ढूंढ़ने के बाद जब वह उन्हें मिला, तो उन्हों ने पाया कि वह एक मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठकर बातें कर रहा है, और सारे लोग उसकी समझ और ज्ञान की बातों से अत्यन्त चकित थे। जब उसकी माता ने उस से आग्रह किया कि वह घर वापस चले और उसे बताया कि वे उसे ढूंढ़ने में कितने परेशान हुए, तो यीशु ने जवाब देकर कहा, "तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे ? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने

पिता के कामों में लगे रहना अवश्य है ?" (लूका २ : ४६)।

यीशु धार्मिकता का एक बहुत बड़ा प्रचारक था। उस के उपदेशों में पवित्रता थी, प्रभाव था, आकृष्ण था, और अधिकार था। इसीलिये, जब वह प्रचार करता था तो उसे सुनने के लिये लोगों की भीड़ की भीड़ उमड़ पड़ती थी। और वह बैठकर उन्हें यूं उपदेश देता था, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" (मत्ती ५ : ३-१०)।

फिर वह अपने चेलों की ओर मुड़कर, उन से कहता था, "तुम पृथ्वी के नमक हो, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों के तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" (मत्ती ५ : १३-१६)।

फिर वह लोगों की भीड़ को देखकर, उन से कहता था, "सावधान

रहो ! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।" (मत्ती ६ : १)।

"अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती ६ : १९-२१)।

किन्तु, यीशु न केवल एक प्रभावशाली प्रचारक ही था परन्तु वह एक महान् शिक्षक भी था। उसका शिक्षा देने का ढंग बड़ा ही निराला था। वह अकसर लोगों को दृष्टान्तों के द्वारा सिखाता था। अर्थात्, वह पृथ्वी पर की साधारण वस्तुओं को लेकर उन के द्वारा बड़ी-बड़ी आत्मिक शिक्षाएं दिया करता था। एक बार उस ने कहा, "स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। और जब भर गया, तो वे उस को किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी-अच्छी को तो बरतनों में इकट्ठा किया और निकम्मी-निकम्मी फेंक दीं। जगत के अन्त में ऐसा ही होगा : स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुन्ड में डालेंगे। वहां रोना और दाँत पीसना होगा।" (मत्ती १३ : ४७-५०) वे लोग जो उसकी सुनते थे, समुद्र में जाल से मछलियां पकड़ने से अच्छी तरह परिचित थे। वे देख सकते थे कि यीशु इस दृष्टान्त से उन्हें क्या शिक्षा दे रहा है। अर्थात्, वे सब जो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना चाहेंगे प्रवेश न कर सकेंगे, परन्तु केवल वही जो परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी होंगे स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे। (मत्ती ७ : २१; लूका १३ : २४)।

दृष्टान्तों के अतिरिक्त, कभी-कभी वह उन्हें किसी वस्तु को दिखा-

कर, उसके द्वारा भी शिक्षा देता था। जैसे कि एक जगह हम देखते हैं, कि जब कुछ लोग उसकी परीक्षा लेने के विचार से उसके पास आए, और यह कहकर उसे परखने लगे, कि तू हमें बता कि कैसर को कर देना उचित है या नहीं ? तो यीशु ने उन से कहा, कि मुझे एक सिक्का दिखाओ, जब उन्हों ने जेब में से निकालकर उसे एक सिक्का दिया, तो यीशु ने उन से पूछा कि इस पर किस की मूर्ति और नाम छपा है ? उन्हों ने कहा, कैसर का। इस पर यीशु ने उन से कहा, कि जो कैसर का है वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है उसे परमेश्वर को दो। (मत्ती २२ : १५-२२) । यहाँ यीशु के सामने दो प्रकार के लोग थे, एक तो वे लोग थे जो हेरोदी कहलाते थे और कैसर का बड़ा सम्मान करते थे और उसे कर देना बड़ा आवश्यक समझते थे। दूसरे, वे लोग थे जो अपने आपको कैसर का बन्धुआ समझते थे और उसे कर देना उचित नहीं समझते थे। सो यदि यीशु उन्हें यह उत्तर देता, कि कर दो, तो इस उत्तर से कुछ लोग तो प्रसन्न हो जाते परन्तु कुछ अप्रसन्न हो जाते। और यदि वह उन से कहता कि कर न दो, तो यह सुनकर कुछ लोग तो प्रसन्न होते परन्तु अन्य लोग उसका विरोध कर उठते। परन्तु यीशु का जवाब इतना सही था कि उसे सुनकर वे बड़े ही अचम्भित हुए।

फिर एक जगह हम देखते हैं, कि जब उसके चेलों में आपस में इस बात पर विवाद होने लगा, कि हम में से स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है ? तो इस पर यीशु ने एक छोटे बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया, और कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।" (मत्ती १८ : १-४; लूका ९ : ४६-४८) । इस प्रकार, यीशु ने उन्हें नम्रता वा दीनता का पाठ

सिखाया। वह उन्हें सिखाना चाहता था कि वास्तव में बड़ा वही है जो अपने आप को छोटा बनाता है। सो थोड़ा आगे चलकर हम देखते हैं, कि एक जगह जब वह अपने चेलों के साथ भोजन करने बैठा, तो उसने एक बरतन में पानी लिया और उनके पैर धोने लगा। उसके चेलों को यह देखकर बड़ा ही अचम्भा हुआ, परन्तु यीशु ने उन से कहा, कि मैं तुम्हें यह नमूना दिये जा रहा हूं, ताकी तुम भी एक दूसरे के साथ ऐसे ही नम्रता वा दीनता का व्यवहार रखो। (यूहन्ना १३ : ३-१५)

फिर जब नीकुदेमुस नाम का एक बड़ा ही प्रतिष्ठित मनुष्य यीशु के पास आकर, उस से कहने लगा कि "हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।" यीशु ने उसकी बात सुनकर उस से कहा, "कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, यदि कोई नए सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है ? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है ? यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा; कि तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहां से आती और किधर को जाती है ? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" (यूहन्ना ३ : १-८)।

यहां यीशु यह सिखा रहा है; कि प्रत्येक मनुष्य को उद्धार प्राप्त

करने के लिये नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है। और यह नया जन्म शारीरिक जन्म की तरह नहीं, परन्तु यह जन्म जल और आत्मा से उस समय होता है, जब मनुष्य यीशु में विश्वास लाकर, आत्मा की शिक्षानुसार बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर, अपने पापों की क्षमा के लिये दफ़न होकर उसमें से बाहिर आता है। (यूहन्ना ६ : ६३; मरकुस १६ : १६; प्रेरितों ८ : ३५-३६; १ कुरिन्थियों १२ : १३)। यीशु ने कहा कि इस बात को सुनकर अचम्भित न हो क्योंकि जबकि तुम पृथ्वी पर की बहुतेरी बातों को ठीक से नहीं समझ सकते तो आत्मा की गूढ़ बातों को क्योंकर समझ सकते हो ? परन्तु यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

मित्रों, मेरा विश्वास है, कि आप अपने जीवन में यीशु की शिक्षाओं से अवश्य ही लाभ उठाएंगे।

१२

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, एलिय्याह, या यिर्मयाह?

मेरा विश्वास है कि आप यीशु से परिचित हैं। किन्तु यीशु के बारे में अनेकों लोगों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ लोगों के विचार में वह एक अच्छा गुरु या शिक्षक था, कुछ सोचते हैं कि वह बड़े-बड़े आश्चर्य के काम करनेवाला था। यीशु के विषय में आज की तरह, उस समय भी लोगों के अलग-अलग विचार थे, जब वह स्वयं इस पृथ्वी पर था। एक बार की बात है :

जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग उसके बारे में क्या कहते हैं? तो हम देखते हैं कि "उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती १६: १३-१८)।

वास्तव में यीशु स्वयं जानता था, कि उसके बारे में लोगों के क्या-क्या विचार हैं। परन्तु अपने चेलों के सम्मुख यह प्रश्न रखने का उसका विशेष अभिप्राय यह था, कि वह इस प्रश्न के द्वारा उन्हें एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा देना चाहता था। प्रश्न के द्वारा शिक्षा देने का ढंग भी बड़ा निराला है। ठीक इसी तरह से परमेश्वर ने भी आदम को आरम्भ में एक शिक्षा दी थी, जब आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि से छिपाने का प्रयत्न किया था। हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने उस से पूछा था, कि आदम, आदम, तू कहां है? वास्तव में परमेश्वर स्वयं जानता था कि आदम कहां है, क्योंकि उसकी दृष्टि से वह कहीं भी छिपकर नहीं बैठ सकता था, परन्तु सच्चाई यह है कि परमेश्वर आदम को दिखाना चाहता था कि वह देखे और अनुभव करे कि परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर वह किस स्थिति में पहुंच गया है।

सो यीशु अपने इस प्रश्न के द्वारा चेलों को यह शिक्षा देना चाहता था कि वे इस सच्चाई का अंगीकार करें कि वह वास्तव में जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और फिर वह उन्हें यह बताना चाहता था, कि इसी चट्टान रूपी अंगीकार के ऊपर कि वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, वह अपनी कलीसिया अर्थात् मन्डली बनाएगा।

परन्तु आईए, इस समय इस प्रश्न पर विचार करें कि उस समय कुछ लोग उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह क्यों कहते थे? प्रत्यक्ष ही है, कि यीशु के भीतर कुछ बातें अवश्य ही ऐसी होंगी जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और एलिय्याह, और यिर्मयाह के बारे में प्रसिद्ध थीं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जबकि यीशु के दिनों में ही रहकर प्रचार करता था और यीशु की मृत्यु से पूव ही उसकी मृत्यु हो चुकी थी, दूसरी ओर, एलिय्याह यीशु से लगभग आठ सौ पचास वर्ष पूर्व हुआ था, और यिर्मयाह यीशु से लग-

भग ६०० वर्ष पूर्व हुआ था।

परन्तु फिर लोग क्यों कहते थे कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है? सबसे पहिली बात इस विषय में जो हम देखते हैं वह यह है, कि वे दोनों एक ही तरह का प्रचार करते थे। अर्थात्, यूहन्ना ने जब प्रचार करना आरम्भ किया था तो उसने यह कहकर अपना प्रचार आरम्भ किया, कि मन फिराओ। और फिर हम यीशु के बारे में देखते हैं कि उसने भी अपने प्रचार का आरम्भ मन फिराव के प्रचार के साथ किया। यूहन्ना लोगों से कहता था कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है, और ठीक यही प्रचार यीशु ने भी किया। (मत्ती ३ : १, २; मरकुस १ : १५)। यूहन्ना पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था, और वह प्रतिदिन इतने अधिक लोगों को बपतिस्मा देता था कि लोग उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहने लगे थे। (मरकुस १ : ३-५; लूका ३ : ३)। किन्तु यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं, कि वह यूहन्ना से भी अधिक लोगों को बपतिस्मा देता था (यद्यपि वह अपने चेलों के द्वारा बपतिस्मा देता था)। (यूहन्ना ४ : १, २) यूहन्ना बड़ा निडर होकर प्रचार करता था। एक जगह हम देखते हैं कि जब लोगों की भीड़ उस से बपतिस्मा लेने को निकल आती थी, तो उसने कहा, "हे सांप के बच्चो, तुम्हें किस ने जता दिया कि आनेवाले क्रोध से भागो। सो मन फिराव के योग्य फल लाओ······और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है, इसलिये जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।" (लूका ३:७-९)। ठीक इसी तरह से निडर होकर यीशु भी प्रचार किया करता था। शास्त्रियों और फरीसियों को संबोधित करके उसने कहा, "हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया और विश्वास को छोड़ दिया है······हे अन्धे अगुवो तुम मच्छर

को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।"(मत्ती २३)। सो यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के समान था।

परन्तु, यीशु एलिय्याह की तरह भी था। एलिय्याह उस समय रहता था जबकि परमेश्वर के लोग उस से फिरकर बाल नाम के एक देवता की उपासना करने लगे थे, वे कहते थे कि हम परमेश्वर की भी उपासना करेंगे और बाल की भी करेंगे। परन्तु एलिय्याह ने उनके पास आकर कहा, कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि वास्तव में यहोवा परमेश्वर है तो उसके पीछे पूरी तरह से हो लो, और यदि बाल हो तो उसके पीछे हो लो। उसने कहा, बाल देवता के सारे याजकों को बुलाओ, जो कि साढ़े चार सौ के लगभग थे, और हम आज परखकर देखेंगे कि सच्चा परमेश्वर कौन है। और उसने बाल के याजकों के सामने यह प्रस्ताव रखा, कि एक बेदी बनाओ और उस पर लकड़ियां चुनकर रखो और अपना बलिदान उस पर धर दो, परन्तु उसमें आग मत लगाओ, इसके विपरीत अपने देवता से प्रार्थना करो कि वह ऊपर से आग भेजकर तुम्हारे बलिदान को स्वीकार करे। और उस ने कहा, कि मैं भी ऐसा ही करुंगा और अपने परमेश्वर से प्रार्थना करुंगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही सच्चा परमेश्वर ठहरेगा। एलिय्याह का यह प्रस्ताव सब को अच्छा लगा। सो सबसे पहिले बाल के पुजारियों ने लकड़ियों पर अपना बलिदान रखा और बाल से प्रार्थना करने लगे कि वह आग गिराकर उन के बलिदान को स्वीकार करे। परन्तु सुबह से शाम हो गई, और बाल के पुजारी प्रार्थना कर करके थककर चूर हो गए, उनके गले सूख गए, किन्तु उनका बलिदान बेदी पर वैसे ही रखा रहा। अब एलिय्याह की बारी थी। उसने लकड़ियों पर अपना बलिदान रखा और फिर लोगों से कहा, कि बेदी पर चार घड़े पानी भर कर उंडेल दो, फिर उसने कहा कि चार घड़े और पानी डालो, जब सारी लकड़ियां, बलिदान और बेदी पानी से अच्छी तरह भीग गए तो उसने कहा कि चार घड़े और

पानी डालो। इसके बाद उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, और अभी वह प्रार्थना कर ही रहा था कि ऊपर से ऐसी आग प्रगट हुई कि उससे बलिदान, लकड़ियां और उसके आस-पास की सब वस्तुएं जल कर भस्म हो गईं। (१ राजा १८)।

यूं एलिय्याह ने अकेले ही जमकर बुराई का सामना किया, वह आत्मिक उन्माद से भरा हुआ था। जबकि लगभग सारे ही लोग बाल की ओर झुकने लगे थे, एलिय्याह परमेश्वर के लिये अकेला ही खड़ा रहा, उसने भीड़ के साथ हो लेने के विपरीत अकेले ही परमेश्वर के साथ हो लेना उचित समझा। और यही विशेषताएं यीशु में भी थीं। उसने लोगों को सच्चे वा जीवते परमेश्वर की ओर फिरने को प्रोत्साहित किया; उसने मनुष्यों की बनाई हुई शिक्षाओं, विधियों और धर्मोपदेशों का विरोध किया (मत्ती १५ : ६)। और वास्तव में उसके इसी प्रकार के खरे उपदेशों के कारण ही कुछ लोग उसके बैरी बन गए और उसे क्रूस का दन्ड दिलवाया। सो यीशु एलिय्याह के समान था।

परन्तु कुछ लोग कहते थे कि वह यिर्मयाह है। यिर्मयाह यीशु से लगभग ६०० वर्ष पूर्व उस समय हुआ था जबकि परमेश्वर ने अपने लोगों के विरुद्ध एक अन्य जाति को उभारा था कि वे उन पर चढ़ाई करके उन्हें बन्धुवाई में ले जाएं, क्योंकि वे लोग परमेश्वर की आज्ञाओं से फिरकर उसके सामने उल्टी चाल चलने लगे थे। यिर्मयाह परमेश्वर का भक्त था। वह जानता था कि एक अन्य देश उनके विरुद्ध क्यों चढ़ा आता है। उस ने लोगों से आग्रह किया कि वे पश्चात्ताप करें। परन्तु लोगों ने उसकी न मानी। और फिर वैसा ही हुआ, परमेश्वर की इच्छा अनुसार वे बन्धुवाई में चले गए। जब यिर्मयाह ने अपने लोगों की हालत देखी कि उसमें से कितने मर चुके हैं, कितने घायल हो गए हैं, और वे दासों की तरह एक अन्य देश में रह रहे हैं, तो उस ने कहा, "भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें

आंसुओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिये रोता रहता।" (यिर्मयाह ६ : १)। यिर्मयाह ने अपने लोगों के लिये अपने शोक वा विलाप को व्यक्त करने के लिये विलापगीत नाम की एक पुस्तक भी लिखी।

परन्तु यीशु यिर्मयाह की तरह था। वह पापियों का मित्र था, वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहिचान थी, वह रोनेवालों के साथ रोता था, उसने सिखाया कि शोक करनेवालों के साथ शोक करो। जिस नगर में वह रहता था, उसकी पाप पूर्ण स्थिति पर आंसू बहाकर उस ने कहा, "हे यरुशलेम, हे यरुशलेम; तू जो भविष्द्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा।" (मत्ती २३ : ३७)। और जब उसे पता चला कि उसके एक मित्र की मृत्यु हो गई है, तो वह शोकित परिवार के पास गया और उन लोगों के साथ मिलकर रोने लगा। (यूहन्ना ११)।

सो यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के समान था, वह एलिय्याह के समान था, और वह यिर्मयाह के समान था। परन्तु क्या आप यीशु के समान हैं? पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" (फिलिप्पियों २ : ५)। यीशु दीन था, नम्र था, परमेश्वर का आज्ञाकारी था। और परमेश्वर चाहता है कि आप भी प्रभु यीशु का अनुसरण करके उसके समान बनें। जब आप यीशु में विश्वास करेंगे, और अपने गुनाहों से मन फिराकर, अपने पापों की क्षमा के लिये उस की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे तो यीशु आपका उद्धार करेगा, और अपने समान बनने में आपकी सहायता करेगा। उसी का बचन आपके हृदयों में अधिकाई से बसे।

१३

मार्ग और सच्चाई और जीवन

वास्तव में हमारे पास यह एक और बड़ा ही सुंदर अवसर है, जबकि हम अपने ध्यानों को अनेकों अन्य बातों पर से हटाकर उन बातों पर लगाने जा रहे हैं जो आत्मिक स्वभाव की हैं, और जिन का सम्बन्ध हमारी आत्मा के उद्धार से है। मेरा विश्वास है कि लगभग सभी मनुष्य इस बात को बिना किसी तर्क के स्वीकार कर लेंगे कि मनुष्य पापी है और उसे उद्धार की आवश्यकता है। परन्तु मनुष्य के उद्धार के सम्बन्ध में तीन बातें बड़ी ही आवश्यक हैं, अर्थात् सबसे पहिले, मनुष्य को एक ऐसे मार्ग की आवश्यकता है जो उसे परमेश्वर के पास वास्तव में पहुंचा सकता है। दूसरे, मनुष्य को सच्चाई की आवश्यकता है, क्योंकि वास्तव में सच्चाई ही मनुष्य को पाप से स्वतंत्र करा सकती है। (यूहन्ना ८ : ३२) और तीसरे, मनुष्य को एक नए जीवन की आवश्यकता है, क्योंकि मनुष्य अपने पाप-पूर्ण जीवन में होकर परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। इसलिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने वर्तमान जीवन से छूटकर उस नए जीवन को पहिन ले जो निष्पाप और कलंक-रहित है और जो परमेश्वर को ग्रहण-योग्य है।

न केवल परमेश्वर का वचन यही घोषित करता है, कि हरएक मनुष्य पापी है, और परमेश्वर की महिमा से रहित है, परन्तु यह भी प्रगट करता है, कि परमेश्वर का वरदान यीशु मसीह में हमारे लिये अनन्त जीवन है। (रोमियों ३:२३; ६ : २३)। वास्तव में, यदि देखा जाए, तो यीशु मसीह मनुष्य के उद्धार के निमित्त परमेश्वर का एक सिद्ध मार्ग

है। क्योंकि मनुष्य की प्रमुख आवश्यकताएं, अर्थात् मार्ग, सच्चाई, और जीवन, एकमात्र यीशु मसीह में ही पूर्ण होती हैं। प्रभु यीशु के अपने ही शब्दों में हम देखते हैं, उस ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना १४ : ६)।

एक यात्री के लिये मार्ग का एक बहुत बड़ा महत्त्व होता है। यह जानने के लिये कि वह सही मार्ग पर चल रहा हैं, उसे कभी-कभी एक नक्शा देखना पड़ता है, या लोगों से पूछ-ताछ करनी पड़ती है। अभी कुछ ही दिन हुए, कि एक सज्जन मुझ से मिलने के लिये मेरे घर आना चाहते थे। वे यह जानते थे कि उन्हें किस स्थान पर पहुंचना है, परन्तु मार्ग से अच्छी तरह परीचित न थे। कुछ इधर-उधर पूछते के बाद, जब वे उस चौराहे पर आ गए जहां से एक मार्ग मेरे घर की ओर आता है, तो उन्होंने एक व्यक्ति से पूछा, कि क्या रिंग रोड यही है ? और उन्हों ने जवाब देकर कहा, कि जी हां, यही है। मेरे मित्र कुछ खुश हुए कि वे अब मेरे घर के निकट आ गए हैं, और वे रिंग रोड पर चल पड़े। परन्तु लगभग डेढ़ घन्टे तक साइकल चलाने के बाद भी जब उन्हें मेरा घर न मिला, तो उन्हें बड़ी परेशानी हुई, और उन्होंने लोगों से पूछा, कि वास्तव में वे किस जगह हैं ? और जवाब सुनकर उन्हें अपने ऊपर बड़ा ही क्रोध आया, क्योंकि वास्तव में वे रिंग रोड पर तो चल रहे थे, परन्तु मार्ग पर पूरब की ओर न चलकर वे पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे, और इस प्रकार, मेरे घर के निकट आने के विपरीत वे अपनी मंज़िल से भटक कर और भी दूर होते जा रहे थे।

परन्तु, इस विषय पर यदि हम आत्मिक दृष्टिकोण से विचार करें, तो हम देखते हैं कि संसार में प्रत्येक मनुष्य एक यात्री है। जबकि कुछ लोगों ने अपनी यात्रा पहिले आरम्भ की थी, और कुछ की यात्रा बाद में

आरम्भ हुई; कुछ लोगों की यात्रा का समय लम्बा होता है, जबकि कुछ लोगों की यात्रा जल्दी समाप्त हो जाती है। परन्तु एक न एक दिन हम सभी अपनी-अपनी यात्रा के अन्त तक पहुंच जाते हैं, और हमारी यात्रा समाप्त हो जाती है। परन्तु हम सब कहाँ जा रहे हैं? यह प्रश्न बड़ा ही गम्भीर है। इस में कोई संदेह नहीं, कि हम सब प्रतिदिन अपनी यात्रा में आगे ही बढ़ रहे हैं। परन्तु प्रश्न यह है, कि हम किस मार्ग पर चल रहे हैं? क्या हमारी यात्रा का अन्त आनन्द-पूर्ण होगा, या शोकपूर्ण होगा? क्या हम उस यात्री की तरह यात्रा कर रहे हैं जो अपने मार्ग को उचित समझकर अन्त तक उस पर चलता तो रहा परन्तु अन्त में उस ने अपने आप को गलत जगह पर पाया? परमेश्वर के उपदेशक ने जिन बातों के विषय में चेतावनी दी, उन में से सबसे शोकजनक बात उस ने यह कही कि "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४ : १२)। प्रभु यीशु ने इसी महत्त्वपूर्ण बात की ओर हमारा ध्यान दिलाकर कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७: १३, १४)। वास्तव में यह बात बिल्कुल सच है, कि जबकि संसार में अधिकांश लोग विनाश को पहुंचानेवाले चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं, बहुत ही थोड़े लोग उस सकरे मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं जो जीवन को पहुंचाता है—और वह मार्ग है, प्रभु यीशु मसीह। क्योंकि वह खोए और भटके हुए लोगों को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने के लिये आया, वह उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिये आया, और उसने कहा, मार्ग मैं हूं।

न केवल यीशु मुक्ति का मार्ग ही है परन्तु उसने कहा कि मैं

सच्चाई भी हूं। सच्चाई एक बड़ा ही उत्तम सिद्धांत है। हम सभी सच्चाई सुनना चाहते हैं। हम में से कोई भी जान-बूझकर झूठ पर विश्वास नहीं करना चाहता, और यद्यपि हम किसी झूठ को सच्चाई समझकर मान भी लें, तौभी सच्चाई सच्चाई ही है। यदि हम परमेश्वर की भक्ति वा उपासना उसकी बताई हुई इच्छानुसार न करें, यदि हम परमेश्वर के दिए हुए मुक्ति के मार्ग पर न चलें, तो हमारी भक्ति, उपासना, इत्यादि सभी व्यर्थ ठहरेंगे। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाकर यों ही नहीं छोड़ दिया कि वे सब अपनी-अपनी इच्छानुसार उसकी भक्ति वा उपासना करें, और अपनी-अपनी इच्छा से अपने उद्धार के अलग-अलग मार्ग चुन लें। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य को एक सिद्ध मार्ग दिया है, उसने मनुष्य पर अपनी सच्चाई को प्रगट किया है, ताकि वह सच्चाई की प्रतीति करे और उस पर चलकर स्वर्ग में अनन्त जीवन को प्राप्त करे।

जीवन का महत्त्व हमारे निकट बड़ा ही अधिक है। हम सब जीवन से प्रेम करते हैं। हम सब अधिक से अधिक जीवन देखने की इच्छा रखते हैं। यदि हम बीमार पड़ जाते हैं, और कोई रोग बड़ा ही गम्भीर रूप ले लेता है, तो हमारी चिन्ता का ठिकाना नहीं रहता। हम यों ही बैठकर अपने अन्तिम दिन नहीं गिनने लगते हैं, परन्तु हम पूरा प्रयत्न करते हैं कि हम जल्दी से जल्दी चंगे हो जाएं। हम डॉक्टर के पास जाते हैं, दवाई लेते हैं, और जो कुछ भी हम से बन पड़ता है, हम अपना भरसक प्रयत्न करते हैं कि हम बच जाएं। क्योंकि हम जीना चाहते हैं, हम मरना नहीं चाहते, हम जीवन से प्रेम करते हैं।

परन्तु तौभी, सच्चाई यह है, कि आत्मिक दृष्टिकोण से मनुष्य एक बड़े ही नाशक रोग से ग्रस्त है, क्योंकि मनुष्य पापी है। पाप वास्तव में बड़ा ही भयानक रोग है, यह रोग बढ़ने और फैलनेवाला रोग है। पाप न केवल मनुष्य के शरीर को ही हानि पहुंचाता है, परन्तु मनुष्य

की आत्मा को भी नरक में अनन्त विनाश का दन्ड दिलवाता है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत ही कम लोग अपनी आत्मा के महत्त्व को जानते हैं, बहुत ही थोड़े लोग स्वर्ग वा नरक और न्याय और अनन्त-काल की वास्तविकताओं से परिचित हैं।

मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। परमेश्वर आत्मा है। और मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार सृजा गया है। परमेश्वर अनन्त है, अर्थात् वह सदा बना रहेगा। और इसी प्रकार मनुष्य जो कि परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर सृजा गया है, आत्मिक भाव से सदा उपस्थित रहेगा। परमेश्वर पवित्र है, अर्थात् उसमें कोई बुराई नहीं है और इसलिये वह स्वर्ग में है। परन्तु मनुष्य पापी और अधर्मी है, उस में कलंक है, और इस कारण वह स्वर्ग में प्रवेश न करके नरक में पहुंचता है, जहां वह सदा अनन्त दुख में रहेगा। नरक वा स्वर्ग दोनों ही अनन्त हैं, अर्थात् उनका कभी अन्त न होगा, और इसी प्रकार मनुष्य भी आत्मिक भाव से, परमेश्वर की तरह, अनन्त है, अर्थात् मृत्यु के बाद मनुष्य जब अनन्तकाल में प्रवेश करता है, तो वह चाहे नरक में प्रवेश करे या स्वर्ग में, जहां भी वह जाएगा, वहीं वह अनन्तकाल तक बना रहेगा। इसी बात पर बल देकर, प्रभु यीशु ने एक बार कहा, कि अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५ : ४६)। अर्थात् अधर्मी नरक में प्रवेश करेंगे और धर्मी स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

परन्तु स्वर्ग में केवल वही लोग प्रवेश करेंगे जो परमेश्वर के पास पहुंचेंगे, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है। और परमेश्वर के पास पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है, अर्थात् यीशु मसीह, जो परमेश्वर और मनुष्यों के बीच संसार में एक बिचवई बनकर आया ताकि उसके द्वारा सारी मनुष्य जाति अपना मेल परमेश्वर के साथ करले। सो

उस ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।"

यदि आप स्वर्ग में परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं, तो उसके मार्ग पर चलें, उसकी सच्चाई का पालन करें, और उसके पुत्र यीशु में होकर नए जीवन को पहिन लें। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्हों ने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों ३ : २६, २७)। परमेश्वर का सदा स्थिर रहनेवाला वचन, जिसके द्वारा हर-एक मनुष्य का न्याय होगा, आपकी आत्मा की अगुवाई करे, ताकि आप उसके मार्ग पर चलें और उसकी सच्चाई को ग्रहण करें और उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें जिसे देने के लिये हमारा उद्धारकर्त्ता स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया। उसी की महिमा युगानयग होती रहे।

१४

परमेश्वर का प्रकाशन

मित्रों :

कुछ ही समय पूर्व मेरे पास एक पत्र आया जिसमें यह प्रश्न लिखा था, कि बाइबल धार्मिक पुस्तक है या विचारों का एक संग्रह है ? बाइबल, वास्तव में, मनुष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपनी इच्छा को व्यक्त किया है। बाइबल हमें सृष्टि की उत्पत्ति, मानव के आदि इतिहास, मनुष्य के उद्देश्य और उसके भविष्य के बारे में बताती है। परमेश्वर ने इस पुस्तक को मनुष्य को इसलिये दिया है ताकि वह जाने कि वह परमेश्वर की रचना है, और चाहे वह कितना भी बड़े सा बड़ा अपराध क्यों न कर बैठे तौभी परमेश्वर उस से प्रेम करता है और उसे क्षमा करने को तैयार है। बाइबल के बिना, वास्तव में, मनुष्य बड़े ही अन्धकार में होता, क्योंकि वह परमेश्वर की महानता और उसके प्रेम और उसकी उद्धार की योजना से अज्ञात होता। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मनुष्य को न केवल जीवन ही दिया है, किन्तु जीवन को बचाने का एक मार्ग भी प्रदान किया है, और उसी का वर्णन हमें बाइबल में मिलता है। यूं तो कहा जा सकता है, कि बाइबल एक इतिहास की पुस्तक है, या बाइबल एक भूगोल की पुस्तक है; या बाइबल एक विज्ञान की पुस्तक है, और या बाइबल धार्मिक शिक्षाओं और उपदेशों का एक संग्रह है; परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बाइबल "परमश्वर का वचन" है। इस पुस्तक के द्वारा परमेश्वर आज भी मनुष्य से बातें करता है, वह इसके द्वारा हमें

चेतावनी देता है, उपदेश और शिक्षाएं देता है, और उस मार्ग पर चलने की आज्ञा देता है जो मनुष्य को अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

इस थोड़े से समय में मैं आपका ध्यान बाइबल की कुछ मुख्य बातों के ऊपर दिलाना चाहता हूं। सबसे पहिले, बाइबल को पढ़कर हम यह देखते हैं, कि आदि में परमेश्वर ने अपने वचन की सामर्थ से आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। आज हम आकाश और पृथ्वी पर जो कुछ भी देखते हैं वह सब परमेश्वर की सृष्टि है। परमेश्वर ने मनुष्य की भी रचना की, परन्तु मनुष्य की सृष्टि परमेश्वर ने बड़े ही विशेष रूप में की। बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने मनुष्य की देह की रचना मिट्टी से की और उसमें अपनी सामर्थ से जीवन फूंक दिया और यूं मनुष्य एक जीवता प्राणी बन गया। उसका शरीर तो पार्थिव था क्योंकि मिट्टी से रचा गया था, किन्तु उसका जीवन आत्मिक था क्योंकि वह उसे परमेश्वर की ओर से मिला था; और इस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। परमेश्वर के संसार में मनुष्य को सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं और वह परमेश्वर की उपस्थिति में रहता था।

परन्तु परमेश्वर की चेतावनी की कोई परवाह न करके एक दिन मनुष्य ने उसकी आज्ञा को तोड़ डाला, और इस प्रकार मनुष्य परमेश्वर की महिमा से गिर गया, सो जब मनुष्य ने देखा कि वह परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पापी बन गया है, तो उसे परमेश्वर की चेतावनी का स्मरण आया और वह अपने आप को परमेश्वर से छिपाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु पाप और पवित्रता एक साथ नहीं रह सकते, सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी उपस्थिति में से निकाल दिया।

किन्तु, परमेश्वर मनुष्य से प्रेम रखता है, क्योंकि उसे उस ने अपने

स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया था। वह मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाना चाहता था, वह उसे फिर से अपनी उपस्थिति में लाना चाहता था। सो परमेश्वर ने अपनी उद्धार की योजना को मनुष्य पर प्रगट किया। उस ने सबसे पहिले एक धर्मी मनुष्य को चुना और उस पर प्रगट करके बताया कि उसके वंश के द्वारा पृथ्वी पर सारे मनुष्यों के लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मेगा। फिर परमेश्वर ने उस मनुष्य के द्वारा एक जाति को उत्पन्न किया और उसके वंश को इस्राएल नाम दिया, अर्थात् परमेश्वर की सामर्थ। इस जाति के बीच परमेश्वर ने बड़े-बड़े अद्भुत काम किए, और उन्हें अपने मार्ग पर चलने के लिये एक व्यवस्था दी। यह व्यवस्था बाइबल का पहिला भाग है, और व्यवस्था की इन पुस्तकों को आज हम पुराना नियम कहते हैं। पुराने नियम में हम अनेकों भविष्यद्वक्ताओं के बारे में पढ़ते हैं, जिन्हों ने परमेश्वर का वचन प्राप्त करके उस चुने हुए वंश को समय-ममय पर परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाया जो उसने उनके पिता इब्राहीम से की थी। न केवल उन्हों ने उस उद्धारकर्त्ता के जगत में आने का समाचार ही दिया, परन्तु यह भी प्रगट किया कि वह किस प्रकार जगत के लोगों का उद्धार करेगा।

बाइबल में पुराने नियम की पुस्तकों को पढ़ने के बाद जब हम नए नियम की पुस्तकों को पढ़ना आरम्भ करते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा और योजना अनुसार, आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व, जगत के उद्धारकर्त्ता का जन्म हुआ। उसका जन्म बड़े ही अद्भुत ढंग से परमेश्वर की सामर्थ से हुआ। जब उसका जन्म हुआ तो एक स्वर्गदूत ने लोगों के एक झुंड पर प्रगट होकर कहा कि "मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है"...तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्ग-

दूतों का एक दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया। कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।" (लूका २ : १०-१४)।

यीशु का जीवन आरम्भ से ही बड़ा अद्‌भुत था, वह बचपन से ही परमेश्वर की बातों में लीन था। बाइबल में हम उसके बारे में पढ़ते हैं कि "बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" (लूका २ : ४०)। जब वह बड़ा हुआ तो उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के हाथ से यह कहकर बपतिस्मा लिया कि "हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" (मत्ती ३ : १५)। जब वह बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया, तो एकाएक आकाश खुल गया और यह आकाशवाणी हुई, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" (मत्ती ३ : १६, १७)। और यहां से यीशु ने अपने उस काम को आरम्भ किया जिसे पूरा करने को वह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था।

उस ने उपदेश दिए, शिक्षाएं दीं, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी को चंगा किया। उसके हल्के से स्पर्श से कोढ़ी चंगे हो जाते थे, अन्धे देखने लगते थे और लंगड़े चलने लगते थे। उसकी आवाज़ सुनकर मुर्दे जी उठते थे और तूफ़ान थम जाते थे। परन्तु तौभी उसमें कुछ घमन्ड न था। वह दीन था और एक दास की नाईं लोगों की सेवा करता था वह पापियों के साथ रहता था और उनके बीच में परमेश्वर की सामर्थ के काम करता था। परन्तु वे लोग जो अपने आप को धर्मी समझते थे उस से ईर्ष्या करते थे, क्योंकि वे कहते थे कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो पापियों के साथ क्यों रहता है? परन्तु यीशु का जवाब यह था कि "वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को आवश्यक है।" (मत्ती ९ : १२)। उसने कहा, कि मैं पापियों को ढूंढ़ने

ग्रौर उनका उद्धार करने आया हूं।" (लूका १९ : १०)।

परन्तु तत्पश्चात् यीशु ने लोगों पर यह प्रगट करना आरम्भ कर दिया, कि बहुत ही जल्द वह अपने शत्रुओं के हाथों पकड़वाया जाएगा और क्रूस के ऊपर लटकाकर मार डाला जाएगा। किन्तु उस ने कहा, "पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन मैं उसे आप ही देता हूं : मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है : यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।" (यूहन्ना १० : १७, १८)।

और इस प्रकार, पिता की आज्ञा, योजना और होनहार के ज्ञान के अनुसार यीशु ने अपने आपको अपने शत्रुओं के हाथ सौंप दिया, और उन्हों ने लेकर उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला। परन्तु, परमेश्वर क्यों चाहता था कि यीशु इस तरह मार डाला जाए? बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने यीशु को वास्तव में इसीलिये जगत में भेजा था। संसार पाप के शाप के नीचे था, परन्तु परमेश्वर मनुष्य को पाप से मुक्ति दिलाकर अपने पास बुलाना चाहता था। सो उसने पाप के बैर को नाश करने के लिये यीशु को बलिदान के रूप में दे दिया। परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार, यीशु ने क्रूस पर जगत के सारे लोगों के लिये अपने प्राणों को बलिदान किया। उस में स्वयं तो कोई पाप न था, परन्तु परमेश्वर ने संसार के सारे पापों के कारण उसे दन्डित किया; वह हर एक मनुष्य के पाप के बदले में मारा गया। बाइबल कहती है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (१ पतरस २ : २४)। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने

हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। वास्तव में, परमेश्वर का प्रेम कितना अपार है! उसका ज्ञान कितना महान् है! वह नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नाश हो, परन्तु उसकी इच्छा है कि सब मनुष्य अपना मन फिराकर उसके पुत्र यीशु के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करें।

बाइबल बताती है, कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद यीशु फिर से जी उठा, क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था। (प्रेरितों २ : २४)। और चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहने के बाद वह फिर से स्वर्ग पर उठा लिया गया। (प्रेरितों १ : ६)। परन्तु स्वर्ग पर जाने से पहिले, उसने पाप से छूटकर उद्धार में प्रवेश करने के मार्ग को, बताकर कहा, कि पृथ्वी पर जो कोई भी मनुष्य इस सुसमाचार पर विश्वास करेगा कि यीशु मेरे पाप के बदले में बलिदान हुआ, और पाप से अपना मन फिराएगा, और बपतिस्मे के द्वारा जल के भीतर अपने पापों की क्षमा के लिये गाड़ा जाएगा, तो उसका उद्धार होगा, और वह अपने अधर्म से छूटकर, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा। (मरकुस १६ : १५, १६; लूका २४ : ४६-४६; यूहन्ना ३ : ३, ५; प्रेरितों २ : ३८-४७)।

प्रभु यीशु का यह सुसमाचार संसार के सारे लोगों के लिये है, क्योंकि यीशु का बलिदान सम्पूर्ण मानव जाति के लिये था। बाइबल हमें बताती है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। मित्रो, मेरा आपसे निवेदन है, कि आप परमेश्वर के इस प्रेमपूर्ण निमन्त्रण को पूरी गम्भीरता के साथ स्वीकार करके, यीशु के द्वारा

अपना मेल परमेश्वर के साथ कर लें। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, वह आपको बचाना चाहता है, और यीशु ने आपके छुटकारे का पूरा दाम भर दिया है। मेरी आशा है कि आप जल्दी ही निश्चय करेंगे। परमेश्वर की आशीष आप पर दिन प्रतिदिन होती रहे।

मृत्यु तथा पुनःरुत्थान

संसार में अनेकों ऐसी बातें हैं जिन्हें हम स्वीकार नहीं करते। अनेकों ऐसी बातें हैं जिन्हें मानने से हम इन्कार करते हैं। जैसे कि कहा जाता है, मनुष्य जाति का आदि सम्बन्ध पशुओं से है; या मृत्यु के पश्चात मनुष्य का अस्तीत्व समाप्त हो जाता है। इस प्रकार की बातें वास्तव में स्वीकार करने योग्य नहीं हैं। परन्तु कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनसे इन्कार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे सच्चाई हैं। हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि एक परमेश्वर है, क्योंकि परमेश्वर के अस्तीत्व के प्रमाण अनेक हैं। सारी सृष्टि इस बात की ओर संकेत करती है कि परमेश्वर है। यदि सृष्टि है तो सृष्टि का रचनेवाला भी अवश्य है। यदि एक नमूना है तो नमूने का बनानेवाला भी अवश्य है। आपका घर अपने आप ही बनकर खड़ा नहीं हो गया, परन्तु उसे किसी ने बनाया है। मान लीजिये, आपके घर में दीवार पर टंगी फोटो को देखकर कोई कहे कि इस चित्र का कोई बनानेवाला नहीं है, तो आप इस बात को मानने से इन्कार करेंगे, क्योंकि आप जानते हैं कि वह चित्र किसी ने अवश्य ही बनाया है। आपके घर वा उस चित्र के बनाए जाने का प्रमाण वास्तव में इस में नहीं है कि आपने उनके बनानेवालों को स्वयं देखा हो, परन्तु वह घर और वह चित्र स्वयं ही इस बात का प्रमाण हैं कि उनका कोई अवश्य ही बनानेवाला है। जब मैं परमेश्वर की अद्भुत सृष्टि को अपनी खुली आँखों से देखता हूं, तो मैं पवित्र बाइबल के लेखक के साथ यह कहने पर बाध्य हो जाता हूं कि "आकाश ईश्वर की

महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमन्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।" (भजन १९ : १) । सो मैं परमेश्वर का इन्कार नहीं कर सकता।

इसी प्रकार, हम मृत्यु का भी इन्कार नहीं कर सकते। यह एक सच्चाई है। हम प्रतिदिन लोगों को मरते हुए देखते हैं। हम सब जानते हैं कि आज पृथ्वी पर जितने भी प्राणी जीवित हैं, एक न एक दिन वे अवश्य ही मरेंगे। कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि वह कभी नहीं मरेगा, क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से नियुक्त एक सच्चाई है। परमेश्वर का वचन कहता है, "मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९ : २७)।

और इसी तरह से, पुनःरुत्थान का भी इन्कार नहीं किया जा सकता। क्योंकि जिस तरह से यह सच है कि मनुष्य आज जीवित है, और एक दिन वह अवश्य ही मरेगा, उसी प्रकार यह भी वैसे ही सच है कि एक दिन सब मनुष्य जी उठेंगे। इस विषय में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रमाण जो यहां दिया जा सकता है, वह है स्वयं प्रभु यीशु मसीह का पुनःरुत्थान। न केवल यीशु मारा और गाड़ा ही गया, परन्तु अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वह फिर से जी भी उठा। यह घटना किसी कोने में नहीं घटी, परन्तु जिस प्रकार लोगों ने उसे सूली पर मरते हुए और मृत्यु के बाद कब्र में दफ़न होते देखा, वैसे ही उसकी मृत्यु के तीन दिन के बाद लोगों ने उसे फिर से जीवित देखा। उन्होंने उसके जी उठने की गवाही दी और खुलकर इस सच्चाई का प्रचार किया। यहां तक, कि उन में से बहुतेरों ने अपनी इस गवाही के कारण अपने प्राणों तक को बलिदान कर दिया।

हम देखते हैं कि यीशु के चेलों ने जब उसका सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ किया, तो सबसे पहिले उन्हों ने लोगों के सामने इसी

सच्चाई को पेश किया। उन्हों ने बताया कि यीशु ने उनके बीच में रहकर बड़े-बड़े काम किए परन्तु, "उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।" (प्रेरितों २: २३, २४)। यहाँ उन्हों ने लोगों को कुछ भविष्यद्वाणियों का भी स्मरण दिलाकर कहा, कि ये बातें ठीक वैसे ही पूरी हुई हैं जैसे कि पहिले कहा गया था, कि मसीह मारा जाएगा, गाड़ा जाएगा, और फिर जी उठेगा।

यीशु के चेलों ने सबसे पहिले उन्हीं लोगों के बीच में इस गवाही को दिया जिन्होंने स्वयं यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में भाग लिया था। उन से उन्हों ने कहा, "तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और बिनती की, कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए। और तुम ने जीवन के कर्त्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं।" (प्रेरितों ३: १४, १५)। और, नि:संदेह, उनमें से हजारों इन बातों को सुनकर अपने मनों मे शोकित हो उठे, उन्हों ने उस में विश्वास किया और अपने पाप से मन फिराया और उसकी आज्ञानुसार अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया, और सबसे पहिले वही मसीह की मन्डली में मिलाए गए। (प्रेरितों २ तथा ३)।

यीशु के मरे हुओं में से जी उठने की गवाही देने के कारण उन में से अनेकों जेलखानों में डाले गए। स्तिफ़नुस को पत्थरवाह करके मार डाला गया। (प्रेरितों ७)। याकूब को तलवार से मार डाला गया। (प्रेरितों १२)। परन्तु उपद्रव के साथ-साथ, यीशु के पुन:रुत्थान का प्रचार और भी ज़ोर से फैलने लगा। हज़ारों लोग यीशु की आज्ञाओं

को मानकर उसकी कलीसिया में शामिल होने लगे, और उसकी इस प्रतिज्ञा की बाट जोहने लगे कि एक दिन वह अवश्य ही उन्हें लेने वापस आएगा। वे जानते थे कि इस आशा के साथ चाहे उनकी मृत्यु भी क्यों न हो जाए परन्तु उसके आने पर वे अपने उद्धारकर्त्ता ही की तरह फिर से जी उठेंगे। वे इसी आशा के साथ जीते थे और इसी आशा में मरते थे।

सो यीशु का एक बड़ा ही प्रसिद्ध चेला, अपनी एक पत्री में, मसीह यीशु की मन्डली को एक जगह लिखकर कहता है, "हे भाईयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिस में तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है.....कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा। और कैफ़ा को तब बारहों को दिखाई दिया। फिर पांच सौ से भी अधिक भाईयों को एक साथ दिखाई दिया.....सो जबकि मसीह का यह प्रचार किया जाता है, कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने क्योंकर कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनःरुत्थान है ही नहीं ? यदि मरे हुओं का पुनः-रुत्थान ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा। और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १५)। यहाँ पर कुछ ऐसे लोग थे जो मरे हुओं के पुनःरुत्थान पर संदेह करने लगे थे, वे सोचते थे कि शायद यह काम असम्भव है। परन्तु प्रेरित उन्हें कहता है, कि ऐसा सोचकर वे उसी टहनी को काट रहे हैं जिस पर वे स्वयं बैठे हैं, क्योंकि वह उन्हें याद दिलाकर कहता है, कि आरम्भ में जिस बात को उन्हों ने ग्रहण किया था और जिस में वे स्थिर थे और जिसके द्वारा उनका उद्धार होता है, वह यही सुसमाचार है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया और जी उठा। और जबकि यीशु मसीह वास्तव में मुर्दों में से जी उठा, तो यह कहना

क्योंकर उचित है कि पुन:रुत्थान है ही नहीं ? सो इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण कि मुर्दे अवश्य ही जी उठेंगे, प्रेरित इस तर्क के द्वारा देता है, कि क्योंकि यीशु मसीह मुर्दों में से जी उठा, और जो सो गए हैं उन में पहिला फल हुआ, तो मुर्दों का जी उठना कोई अचम्भे की बात नहीं है।

इसी विषय पर एक दूसरे प्रश्न का जवाब देकर वह कहता है, "अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ आते हैं ? हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना है, चाहे गेहूं का, चाहे किसी और अनाज का। परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उसको देह देता है; और हर एक बीज को उस की विशेष देह......मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है; और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है......क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही ? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा ? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।" (१ कुरिन्थियों १५)।

पाप मृत्यु को उत्पन्न करता है, परन्तु यीशु ने क्रूस पर पाप को नाश कर दिया, और मुर्दों में से जी उठकर मृत्यु को सदा के लिये

हरा दिया। और इसलिये, यीशु के द्वारा मनुष्य पाप से छूटकर अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है। प्रभु यीशु ने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन में ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।" (यूहन्ना ११ : २५, २६)। उस ने कहा, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दन्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना ५ : २४)।

मित्रो, एक दिन प्रभु यीशु अपनी प्रतिज्ञानुसार अवश्य ही वापस आएगा। वह दिन न्याय का दिन होगा; वह दिन एक बड़े पुन:रुत्थान का दिन होगा; उस दिन सब जी उठेंगे, और यीशु ने कहा, "जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना ५ : २९)। क्या आप उस महान दिन का सामना करने के लिये अपने आप को अभी से तैयार करना न चाहेंगे? परमेश्वर आप की सहायता करे जबकि आप उसके वचन पर चलने का निश्चय करते हैं।